कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट
देवरी रोड भाटापारा
श्री रामनारायाण शिक्षण संस्थान द्वारा संचालित

श्यामा

अष्टम् संस्करण

सत्र:-2023-2024

Email Id- kksitbhatapara@gmail.com
Website- kksit.co.in

Vision of the College-

Welcome to Kamlakant Shukla Institute

Kamlakant Shukla institute is the only one Teacher's-Education college in Baloda Bazar district. The Famous for providing higher Education and quality education to the students of rural and distant areas. College was established in the year 2012 by Shri Manish Shukla along with his respected father Late. Shri Kamlakant Shukla was in the memory run by the leading and reputed educational society Shri Ramnarayan Shikshan Samiti.

To College is affiliated to Pandit Ravishankar Shukla University Raipur and recognized by NCTE & Higher Education Department (Chhattisgarh Govt.)

The College is Completing 10 years of service in the field of Higher Education for the village students. The College has adequate facilities like Classroom, Library, Computer laboratory, Curriculum laboratory, ICT Lab, Smart Class Room, WI-Fi Campus, Resource Centre, Health and Physical Education Resource Centre, Multipurpose Hall, Playground etc.

The Course offered by our college are B.Ed., PGDCA, DCA, B.A , B.Sc. BCA, B.Com (with Computer Application).

The motto and main objective of the college is "Education is the Supreme Power" according to which, the aim is to provide Higher Education , Philosophical, development & self dependent teacher-educator , moral, cultural , professional, development of rural students through various types of activities along with regular teaching –learning curriculum and to develop them properly by making them skilled and self-reliant responsible citizens.

Vision of the College-

The Vision of the college is to provide quality Higher Education to the promising students especially from the rural areas and to yield a talent teacher educator by gathering skills and intelligence important role in the field of education and face all the challenges .

Misiion of the College-

- **ज्ञानं परमं बलम्** Is mission of our college become philosophical development, physical & mental development is done by knowledge.
- Provided higher education to all village children's.
- Developed skilled and self dependent teacher-educator.
- To provided moral, Cultural professional development of students through various activities.

स्व.श्री पं. रामनारायाण बूजभुषणलाल शुक्ल

स्व.श्री पं. कमलाकांत रामनारायाण शुक्ल

पुज्य माता जी को समर्पित .....

स्व.श्रीमति श्यामादेवी शुक्ला

मां शब्द में ममता, त्याग व असीम प्रेम की भावना छिपी है। संसार में मां का दर्जा सबसे ऊंचा है। मातृत्व एक ऐसी अनुभूति है जो सभी सांसारिक सूखों से बढ़कर है।

****

पूरा नाम– श्रीमति श्यामा शुक्ला

पति– श्री कमलाकांत शुक्ला

पिता – श्री भगवती प्रसाद मिश्रा

माता– श्रीमति शिवदेवी मिश्रा

आयु– 92 वर्ष

जन्म तिथि– 01/11/1931

मरण तिथि– 24/11/2023

जन्म स्थान– राज्य – ओड़िसा ,झारसुगड़ा

शिक्षा – आठवी

पाल्यों के नाम – मनीष शुक्ला , रेणु शुक्ला , नीतू शुक्ला

पद– कान्यकुब्ज ब्राम्हण महिला समाज की अध्यक्ष , तथा श्री रामनारायण शिक्षण संस्थान की अध्यक्षा,।

<u>जीवन परिचय एंव पारिवारिक पृष्ठभूमि :–</u>

श्रीमति श्यामादेवी शुक्ला का जन्म 01 नवम्बर 1931 को ओड़िसा राज्य के झारसुगड़ा क्षेत्र में एक ब्राम्हण परिवार में हुआ था । श्यामा जी का ननीहाल उत्तरप्रदेश है। उनके पिता श्री भगवती प्रसाद मिश्रा तेंदुपत्ते के बड़े व्यापारी थे उनका विवाह ब्राम्हण समाज के प्रतिष्ठीत बलौदा–बाजार के सोने–चांदी के व्यापारी श्री रामनारायण शुक्ला जी के बड़े पुत्र श्री कमलाकांत शुक्ला जी के साथ 15 वर्ष की आयु में हुआ था। श्यामा जी के दो पुत्री (रेणु शुक्ला , नीतू शुक्ला) एंव एक पुत्र (मनीष शुक्ला) हैं । उनके पति कमलाकांत शुक्ला जी का निधन 1999 में हुआ इस दुख की घड़ी में उन्होने अपने पुरे परिवार को बड़ी जिम्म. ेदारी से संम्भाला और साथ ही साथ अपने पुत्र को इस योग्य बनाया की वे अपने पिता के व्यापार की बागडोर सभांल कर उन्नति की ओर अग्रसर हों।

<u>कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट की स्थापना में विशेष योगदान :–</u>

श्यामादेवी शुक्ला का शिक्षा के प्रति गहन रूझान था श्यामादेवी शुक्ला एंव उनके पति कमलाकांत शुक्ला जी का स्वप्न था कि भाटापारा क्षेत्र में गरीब तथा ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों को उच्च शिक्षा हेतु भाटापारा में शिक्षा महाविद्यालय का निर्माण करना । श्यामादेवी जी के पुत्र मनीष शुक्ला जी ने अपने माता–पिता के स्वपन को साकार रूप 2012 में दिया तथा इंस्टीट्यूट की नीव अपने माता श्यामादेवी शुक्ला जी के करकमलों द्वारा रखी गई। संस्था के स्थापना हेतु श्री रामनारायाण शिक्षण संस्थान का गठन 2009 में किया गया जिसकी अध्यक्षता श्रीमती श्यामा देवी शुक्ला के द्वारा की गई थी। समिति की बैठक में अध्यक्षा श्रीमती श्यामा देवी शुक्ला के द्वारा शिक्षा महाविद्यालय कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट की नीव रखने का निर्णय किया गया। तथा श्री रामनारायाण शुक्ला के पुत्र कमलाकांत शुक्ला के नाम पर कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट रखा गया। उनके द्वारा स्थापित महा. विद्यालय बलौदाबाजार जिले को एकमात्र शिक्षा महाविद्यालय के रूप में पहचान दी जो निंरतर शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति की ओर

अग्रसर हैं 2012 से अभी तक कई हजारों छात्र–छात्राओं ने शिक्षा एंव प्रशिक्षण प्राप्त कर अपने आप को शिक्षक के रूप में पदस्थ होकर उज्जवल भविष्य का निर्माण किया हैं उन्होने महाविद्यालय में समय–समय पर छात्रों के शिक्षा के नये–नये आयाम एंव अवसर देने का सदैव प्रयास किया।

महाविद्यालय में कमलेश्वर महादेव मंदिर की स्थापना :–

श्यामादेवी शुक्ला बहुत ही धार्मिक, आध्यात्मिक विचारों एंव ईश्वर के प्रति विशेष आस्था रखती थी। पूजा पाठ ईश्वर भक्ति में विशेष रूचि थी । उनके प्रस्ताव अनुरूप श्री मनीष शुक्ला जी के द्वारा श्री शिव परिवार की प्राण प्रतिष्ठा दिनांक 24 जुलाई 2023 दिन सोमवार के श्रावण शुक्ल पक्ष को की गई । मंदिर का नामकरण श्री कमलेश्वर महादेव उनके सानिध्य में रख गया। उन्होने अपना अधिकतम समय ईश्वर भक्ति में व्यतित किया।

श्यामा जी का व्यक्तित्व :–

श्यामादेवी शुक्ला बहुत ही सरल–सहज , स्पष्टवादी, मृदुभाषी स्वभाव की थी इनका ईश्वर के प्रति आस्था एंव पौराणिक कथाओं में रूचि थी। क्योंकि वे हमेशा से ही सत्य की मार्ग को दर्शातें थें।

ब्राम्हण महिला समाज की अध्यक्ष :–

श्यामादेवी शुक्ला हमेशा से ही महिलाओं के बीच सक्रिय रही हैं। उनका ब्राम्हण महिला समाज में सदैव नयें कार्यों एंव आधुनिक विचार धारा पर जोर देती थी। वे महिलाओं को उच्च शिक्षा एंव आधुनिकीकरण को अपनाने पर विशेष जोर देती थी। वे कान्यकुब्ज ब्राम्हण महिला समाज में अपने अच्छे कार्य के कारण सक्रिय रूप में अध्यक्ष रहीं।

पर्यावरण एंव प्रकृति के प्रति जागरूकता :–

महाविद्यालय में लघु उद्यान उनके द्वारा श्यामा वाटिका का निर्माण किया गया । जिसमें विभिन्न तरह के फलदार एंव छायादार वृक्ष लगाये गये हैं। इस कार्य का पूरा श्रेय वे अपने पुत्र मनीष शुक्ला एंव महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों को देते हैं । उनका पर्यावरण के प्रति विशेष लगाव रहा था। वे महाविद्यालय में पर्यावरण दिवस के मौके पर विशेष रूप से सभी को प्रेरणा देती थी कि पेड़ प्रकृति की देन हैं , पेड़ हैं तो श्वास हैं।

सभी छात्र–छात्राओं की प्रेरणा स्त्रोत के रूप में :–

बच्चों को वे शिक्षा के साथ–साथ अनेक सामाजिक गतिविधियों के लिए हमेशा प्रेरित करती थी और छात्रों को रोजगार उन्मुखी कार्यों के लिए विशेष जोर देती थी ताकि भविष्य को सुरक्षित किया जा सकें।

नैतिकता एंव संस्कृति पर विशेष जोर :–

श्यामा जी इस आधुनिकता की दौड़ में बच्चों को हमेशा अपनी विचारधारा से , अपनी सोच–विचार में नैतिकता का भाव बड़ों के प्रति आदर, बालकों के प्रति स्नेह, भाव रखने के लिए प्रेरित करती थी । ताकि हम एक अच्छे इंसान होने का परिचय अपनी संस्कृति एंव सभ्यता के माध्यम से दे सकें।

सामाजिक सेवा कार्यो में सक्रियता :–

श्यामादेवी शुक्ला ने आजीवन सेवा कार्यों में सक्रिय रही। समाज के जरूरतमंद लोगो की सहायता हेतु सदैव प्रयासरत रही समाज की आवश्यकता एंव बच्चों को ध्यान में रखतें हुये आर्थिक एंव भौतिक साधनों के सहायतार्थ कार्य किया।

श्यामा पत्रिका :–

उनके मार्ग दर्शन में महाविद्यालय कि पत्रिका जो कि श्यामा पत्रिका के नाम से 2012 से अब तक प्रति वर्ष वार्षिक उत्सव में विमोचन किया जाता हैं । इस पत्रिका में छात्र–छात्राओं द्वारा विभिन्न क्षेत्रों के समसामायिक गतिविधियों , रंगोली , चित्र, चुटकुलें गीत, कविता, परीक्षा परिणाम, सत्र की गतिविधियों एंव छात्रों के समूह फोटों, एंव विभिन्न समितियों का कहानी विचारों , शुभ आशीष संदेशों का , समावेश इस पत्रिका में हमें देखने को मिलता हैं।

****

सत्र- 2023-24

'श्यामा.....

(इंस्टीट्यूट की रचनात्मक पत्रिका)

संपादक

डॉ.वंदना चौहान (प्राचार्य)

सलाहकार समिति

श्रीमति स्मृति सिंह, श्री वैभव गुप्ता ,श्रीमति पूर्णिमा कौशिक, सुश्री नेहा सिंह, सुश्री अनुपमा उमरे, सुश्री भावना हेंवार , डॉ. डॉली अहीर , डॉ.कबिता तिवारी , श्रीमति सुमिता बेरा, श्रीमति नबमिता माईति, श्रीमति शबीना कौशर, डॉ.वंदना कश्यप, श्रीमति सुषमा दुबे , सुश्री सरोजनी वर्मा, श्री प्रवीण बिस्वास, सुश्री वंदना मसीह, श्रीमति प्रमिला शर्मा

छात्र संपादक मण्डल.....

साक्षी ठाकूर , नीलम वर्मा, प्रीति अनंत, ताम्रध्वज साहू , दुलारी निषाद

टंकन एंव ग्रॉफीक्स

श्री मोरजध्वज जयसवाल, श्री गौकरण यादव, श्री राकेश बघेल

श्री रामनारायाण शिक्षण संस्थान प्रबंधन समिति सदस्य

अध्यक्ष

श्री मनीष शुक्ला

उपाध्यक्ष

श्री कौष्तुभ शुक्ला

सचिव

श्रीमति अंजली शुक्ला

श्री राकेश गुप्ता (कोषाध्यक्ष)

रेणु शाह संयुक्त (सचिव)

श्री बंसत मिश्रा (सदस्य)

श्री दिनेश मिश्रा (सदस्य)

शिवरतन शर्मा

विधायक
छत्तीसगढ़ विधानसभा (छ.ग.)
उपाध्यक्ष, भारतीय जनता पार्टी-छत्तीसगढ़

निवास :
सुभाष वार्ड, भाटापारा
जिला बलौदाबाजार-भाटापारा (छ.ग.) पिन 493 118
मों. 94252-06885, 98261-06885
E-mail. : shivratansharma.bjp@gmail.com

अर्द्ध शास.पत्र क्र. 9-2024 /अ.वि.स. —
भाटापारा, दिनांक 5/02/2024

शुभकामना–संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट शिक्षा महाविद्यालय, देवरी रोड भाटापारा, द्वारा प्रतिवर्ष अनुसार सत्र 2023–24 में **"श्यामा–पत्रिका" अष्ठम संस्करण** का गरिमामय प्रकाशन किया जा रहा है, महाविद्यालयीन पत्रिका विद्यार्थीयों की बौद्धिक, रचनात्मक गतिविधियो तथा साहित्यिक अभिरूचि को संबोधित करने का सशक्त माध्यम होती है।

आशा करता हूँ कि पत्रिका के माध्यम से छात्र–छात्राओं को सकारात्मक विचारो के साथ अपनी प्रतिभाओं को व्यक्त करने का सुअवसर प्राप्त होगा।

महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका **"श्यामा–पत्रिका" अष्ठम संस्करण** की सफलता हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाए एवं बधाई।

(शिवरतन शर्मा)
उपाध्यक्ष एवं पुर्व विधायक, भाटापारा
भारतीय जनता पार्टी, छत्तीसगढ

कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी

जिला- बलौदाबाजार-भाटापारा (छ.ग.)

.....शुभकामना संदेश.....

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्ता हुई कि कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट देवरी रोड भाटापारा द्वारा वार्षिक पत्रिका श्यामा अष्टम संस्करण का विमोचन वार्षिक उत्सव 2024 पर करने जा रहा है अत्यंत हर्ष का विषय है कि यह महाविद्यालय शहर और गांव के बीच स्थापित जिले का एकमात्र शिक्षा महा. विद्यालय है मुझे पूर्ण विश्वास के महाविद्यालय के छात्र-छात्रओं की रचनात्मक एवं क्रियाशीलता को बढ़ावा देने के उद्देश्य को पूरा करने का प्रयास किया गया हैं आशा करता हूँ के भविष्य में यह प्रयास जारी रहेंगे और बुलंदियों को छूने को प्रेरित रहेंगे ।

महाविद्यालय के प्राचार्य व संपादक मंडल तथा छात्र-छात्रओं को मैं हार्दिक बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने पुस्तिका प्रकाशन में अपना योगदान दिया मैं इसके सफलता हेतु शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं ।

29.12.25

जिला शिक्षा अधिकारी
बलौदाबाजार–भाटापारा, छ.ग.

अध्यक्ष की कलम से .....

संसार को सुन्दर और समरस बनाने का बुनियादी मार्ग है- अभिव्यक्ति।

अभिव्यक्ति में अतीत की स्मृतियाँ होती हैं तो वर्तमान की चुनौतियाँ और भविष्य के स्वप्न भी। कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट की वार्षिक पत्रिका "श्यामा" अभिव्यंजना की विविध विधाओं, शैलियों रूपों में महाविद्यालय के जनसमूह की वि. विध भावनाओं की अभिव्यक्ति की रंगभूमि है। पत्रिका के प्रकाशन से इस रंगभूमि को व्यापक दृष्टा समुदाय मिल सकेगा - इस मंगलकामना के साथ श्यामा पत्रिका को प्रकाशित और लोकार्पित करते हुए मुझे असीम हर्ष और आनन्द की अनुभूति हो रही है।

इंस्टीट्यूट की पत्रिका छात्र-छात्रओं की अभिव्यक्ति का न केवल माध्यम हैं वरन् उसके माध्यम से उनके विचारों की दशा के साथ क्षेत्रीय संस्कृति ,जीवन मूल्य ,वैज्ञानिक प्रगति ,सांस्कृतिक व नैतिक मूल्य ,राष्ट्र प्राकृतिक सौंदर्य, पर्यावरण आदि की प्रत्यक्ष परोक्ष अभिव्यक्ति होती है श्यामा पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय में अध्यनरत छात्र-छात्रओं की रचनाशीलता एवं विचारक क्षमता का प्रतिबिंब प्राप्त होता है मुझे आशा है कि श्यामा पत्रिका अष्टम् संस्करण इंस्टीट्यूट की नई रचना-पौधें को आगे बढ़ाने में और उसे ठोस सृजनात्मक मंच देने में सफल सिद्ध होगी ।

मैं पत्रिका के सफलता हेतु आप सभी को शुभकामनाएं एंव बधाई प्रेषित करता हूं

अध्यक्ष
श्री मनीष शुक्ला
श्रीरामनारायाण शिक्षण संस्थान

सचिव की कलम से .....

कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट की वार्षिक पत्रिका ''श्यामा'' अष्टम् संस्करण, इंस्टीट्यूट की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों एवं उपलब्धियां का दर्पण मात्र ही नहीं होती बल्कि इंस्टीट्यूट के छात्र-छात्रओं के बौद्धिक , वैचारिक एवं रचनात्मक प्रतिभा , की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी होती है ।

मैं आशा करती हूं कि पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं सारगर्भित होगी और छात्र-छात्रओं का उचित मार्गदर्शन करने एवं उनके विचारों में रचनात्मक परिवर्तन लाने में सक्षम होगी ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु महाविद्यालय परिवार को मंगल कामनाओं सहित हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करती हूं।

Anjali Shukla

सचिव
श्रीमति अंजली शुक्ला
श्रीरामनारायाण शिक्षण संस्थान

प्राचार्य की कलम से .....

वार्षिक पत्रिका श्यामा का यह अष्टम संस्करण, इंस्टीट्यूट की सृजनशीलता की एक प्रस्तुति है। कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट अनेक विविधताओं और उपलब्धियां वाला भाटापारा में स्थित बलौदा बाजार जिले की एकमात्र शिक्षा महाविद्यालय है, जो उच्च शिक्षा में गुणवत्ता के लिए सतत प्रयत्नशील है। अध्यनरत विद्यार्थी न केवल शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं बल्कि सामाजिक दायित्वों से सरोकार रखते हुए एक उत्तरदायी नागरिक की भूमिका निभाने में सफल हो रहे हैं इंस्टीट्यूट के छात्र-छात्रए राष्ट्रीय एंव राज्य स्तर पर सेवाएं देकर उपलब्धियां अर्जित कर इंस्टीट्यूट की बेहतर छवि सृजित कर रहे हैं जिसमें विद्यार्थियों के साथ अभिभावकों, पूर्व छात्रों, जनप्रतिनिधि, समाजसेवियों, और विभिन्न हितग्राहियों का सक्रिय सहयोग संस्था की उपलब्धि है

शैक्षणिक और शैक्षणैत्तेर गतिविधियां, क्रीडा ,सांस्कृतिक कार्यक्रम ,महिला सशक्तिकरण ,बौद्धिक , व्याख्यान, कार्यशाला ,सेमिनार मूल्य सवंर्धित पाठ्यक्रम कोर्स आदि ने इंस्टीट्यूट की सृजनशीलता के नए आयाम स्थापित किए हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं जिनके सम. र्पित प्रयासों से यह पत्रिका आप तक पहुंच रही है। मुद्रण स ंस्था ने श्यामा प्रकाशन की गुणवत्ता बनाए रखने में अहम भूमिका निर्वाह की है।

छात्र-छात्रओं के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं के साथ आप सभी को हार्दिक बधाई।

प्राचार्य
PRINCIPAL
कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट
KAMLAKANT SHUKLA INSTITUTE
दवरी रोड भाटापारा
BHATAPARA (C.G.)

संपादक की कलम से .....

प्रिय पाठकों!

विवेकानंद ने कहा है कि सारी शिक्षा का ध्येय है मनुष्य का विकास। वह मनुष्य जो अपना प्रभाव सब पर डालता है। जो अपने संगियों पर जादू-सा कर देता है, शक्ति का एक महान केन्द्र है और जब वह मनुष्य तैयार हो जाता है तो वह जो चाहे कर सकता है। यह व्यक्तित्व जिस पर अपना प्रभाव डालता है, उसी को कार्यशील बना देता है

(स्वामी विवेकानंद, विवेकानंद साहित्य, चतुर्थ ख.ड पृ. 172)

अतः कह सकते हैं कि इंस्टीट्यूट की प्रत्येक इकाई को कार्यशील होकर अपने शब्दों और कर्मो की एकता से स्थानीय समुदाय, समाज और राष्ट्र को नवनिर्मित नवसृजित करना है।

इंस्टीट्यूट द्वारा वार्षिक पत्रिका ' श्यामा' अष्टम् संस्करण का प्रकाशन प्रतिवर्ष प्रकाशित किया जाता हैं। पत्रिका विद्यार्थियों की रचनात्मक शक्ति एवं संपादक मंडल के सदस्यों की कड़ी मेहनत ,दृढ़निश्चय, एवं प्राध्यापकों, कार्मिकों के सक्रिय सहयोग का ही परिणाम है। पत्रिका में सम्मिलित विभिन्न रचनाँ, विद्यार्थियों की रचनात्मकता तथा सृजनशीलता की अभिव्यक्ति है।

अध्ययन के साथ क्रीड़ा, राष्ट्र एवं समाजसेवा सांस्कृतिक एवं कलात्मक प्रदर्शन आदि सहशैक्षणिक गतिविधियों में विद्यार्थियों की सहभागिता को छायाचित्रों द्वारा संरक्षित करने का दायित्व भी संपादक मंडलद्वारा निभाया गया है। मुझे विश्वास है कि ' श्यामा' का यह अंकन छात्र-छात्रओं हेतु संग्रहणीय सिद्ध होगा।

डॉ. वंदना चौहान
कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट
देवरी रोड भाटापारा

शैक्षणिक पाठ्यक्रम -

1. बी.एड.
2. बी.ए.
3. बी.कॉम
4. बी.एस.सी.
5. बी.सी.ए.
6. पीजीडीसीए
7. डीसीए

समाचार —पत्रिका 2023—24

कमलाकांत शुक्ला महाविद्यालय में ऑनलाइन आवेदन मंगाए

भाटापारा @ पत्रिका. कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट देवरी रोड भाटापारा द्वारा शैक्षणिक सत्र 2023-24 में बी.कॉम, बी.कॉम कम्प्यूटर, बी.ए. बीएससी. बीसीए, डीसीए, पीजीडीसी के प्रथम वर्ष/ सेमेस्टर में प्रवेश के लिए ऑनलाइन पोर्टल 8 जून से 25 जुलाई तक खोली गई है। प्रवेश संबंधित जानकारी महाविद्यालय और 7000965887, 9826119418, 9630736193 से प्राप्त की जा सकती है।

कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट में वनमहोत्सव हर्षउल्लास से मनाया गया

शिक्षाकर्मी

आवश्यकता है - बी.एस.सी. बी.कॉम डी.सी.ए. एवं पी.जी. डी.सी.ए. पाठ्यक्रम में अध्यापन कार्य हेतु सहायक प्राध्यापक की आवश्यकता है एम.कॉम वाणिज्य विषय, एम.एस. सी. जन्तु विज्ञान, एम.सी.ए कम्प्यूटर विज्ञान में योग्य अनुभवी व्यक्ति कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट देवरी रोड भाटापारा में मेल आईडी kksibhatapara@gmail.com मोबाइल 9630736193, 7000965887 सम्पर्क करें

महाविद्यालय में किया गया मतदाता सूची विशेष शिविर का आयोजन

'छत्तीसगढ़' संवाददाता

भाटापारा, 20 अगस्त। नगर के प्रतिष्ठित शिक्षा महाविद्यालय कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट देवरी रोड भाटापारा में दिनांक 19 अगस्त 2023 दिन शनिवार को मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने हेतु विशेष शिविर का आयोजन किया गया जिसमें महाविद्यालय के छात्र छात्राओं ने उत्साहित होकर मतदाता सूची में नाम दर्ज कराया। तथा मतदाता पर्चो में सुधार भी किया गया और उन्हें मतदाता परिचय पत्र के बारे में जानकारी भी दी गई।

उक्त शिविर में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. वंदना चौहान तहसील कार्यालय से अभिषेक वर्मा, बी राम कौशल, रजनी धुर्वे (निर्वाचन अधिकारी) उपस्थित थे।

कमलाकांत इंस्टीट्यूट द्वारा निःशुल्क रक्तचाप परीक्षण शिविर आयोजित

ग्रामीण-शहरी स्कूलों में दरी वितरण

भाटापारा @ पत्रिका. शिक्षा महाविद्यालय कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट देवरी रोड भाटापारा द्वारा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के स्कूलों में दरी का वितरण किया गया।

इसके तहत बलौदा बाजार के शासकीय चक्रपाणि स्कूल एवं शासकीय लक्ष्मी प्रसाद कन्या उमा शाला और भाटापारा शहर के रामसागर पारा, पूर्व माध्यमिक न्यू हिंदी स्कूल, पंचम दीवान आत्मानंद स्कूल एवं ग्रामीण क्षेत्र में दलोरी, अमलीडीह, सेमरिया तरेंगा, देवरी, सुमा, सिंगारपुर, गोढ़ी (टी) टेमाटार और रोहरा के स्कूलों में दरी वितरण किया गया। इस सराहनीय कार्य की प्रशंसा करते हुए स्कूलों के प्राचार्य द्वारा महाविद्यालय को निरंतर उन्नति के पथ पर अग्रसर होने की कामना की।

पत्रिका

जिला उत्सव में कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट के छात्रों ने भाग लिया

भाटापारा @ पत्रिका. नेहरू युवा केंद्र रायपुर बलौदा बाजार छत्तीसगढ़ के तहत शासकीय मिनीमाता कन्या महाविद्यालय बलौदा बाजार में आयोजित जिला उत्सव में महाविद्यालय कमलाकांत शुक्ला इंस्टीट्यूट शिक्षा संकाय के छात्र-छात्राएं ने विभिन्न प्रतियोगिता में भाग लिया। इसमें युवा संस्कृति प्रस्तुति में वागीशा, आंचल, डीम्पा, एकता, नीलम, स्वाति ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुति में तृतीय स्थान प्राप्त किया। युवा लेखक कविता में स्वाति ने तृतीय स्थान प्राप्त कर महाविद्यालय का नाम गौरवान्वित किया। संस्था के प्राचार्य एवं संस्था के संचालक मनीष शुक्ला ने बधाई दी है।

20/07/2023, Edition: Raipur Zila, Page: 14

: https://epaper.patrika.com

कमलाकांत इंस्टीट्यूट के प्रशिक्षार्थियों ने सजाये कलश

सिविल हास्पिटल में मरीजों को फल वितरण किया गया

छात्र-छात्राओं ने चलाया स्वच्छता अभियान

स्वामी आत्मानंद विद्यालय में प्रवेशोत्सव

KAMLAKANT SHUKLA INSTITUTE

GPS Map Camera

GPS Map Camera
Bhatapara, Chhattisgarh, India

GPS Map Camera
Bhatapara, Chhattisgarh, India

GPS Map Camera
Bhatapara, Chhattisgarh, India

GPS Map Camera
भाटापारा, छत्तीसगढ़, भारत
QW6P+FM4, भाटापारा, छत्तीसगढ़ 493118, भारत
Lat 21.761094°
Long 81.937252°
08/07/23 01:59 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera

GPS Map Camera
भाटापारा, छत्तीसगढ़, भारत
QW6P+FM4, भाटापारा, छत्तीसगढ़ 493118, भारत
Lat 21.761094°
Long 81.937252°
08/07/23 01:58 PM GMT +05:30
Google

GPS Map Camera

LITTLE SCHOLARS
BHATAPARA
GPS Map Camera

LITTLE SCHOLARS
BHATAPARA
GPS Map Camera

OPPO A9

24/07/2020 11:25

OPPO A9

GPS Map Camera

GPS Map Camera

GPS Map Camera

GPS Map Camera
Bhatapara, Chhattisgarh, India

GPS Map Camera
Bhatapara, Chhattisgarh, India

GPS Map Camera
Bhatapara, Chhattisgarh, India

LITTLE SCHOLARS

GPS Map Camera
Bhatapara, Chhattisgarh, India

GPS Map Camera
Lawai, Chhattisgarh, India

GPS Map Camera
Lawai, Chhattisgarh, India

GPS Map Camera
Bhatapara, Chhattisgarh, India

श्री वाटिका वृद्धा आश्रम
GPS Map Camera
Kukadi, Chhattisgarh, India

श्री वाटिका वृद्धा आश्रम
GPS Map Camera
Kukadi, Chhattisgarh, India

KAMLAKANT SHUKLA INSTITUTE DEORI ROAD BHATAPARA

Top 3 Students Session 2021-23 B.Ed Students

SUSHMA PAL

82%

ANAMIKA VERMA

81.64 %

DOLLY KOSHALE

81.05 %

Top 3 Students Session 2022-23 PGDCA Students

SHIVANI

76.8%

PALAK BHOJWANI

70.7%

KULESHWAR

69.5%

Top 3 Students Session 2022-23 DCA Students

AJAY KUMAR

81.42%

AMITA BANJARE

78.25%

LACKY MARAVI

77.67%

Top 3 Students Session 2022-23 B.Com III Year Students

AIWA GUPTA

75.28 %

KUMKUM BANJARE

74.78 %

SADHNA SEN

70.33%

शिक्षक की सीख

श्रीमति स्मृति सिंह
सहा.प्राध्यापक शिक्षा विभाग

एक कक्षा में अध्यापक छात्रों को पढ़ा रहे थे. तभी कक्षा के दो छात्र आपस में झगड़ने लगे. उनका झगड़ा देख अध्यापक ने पूछा, "क्या बात है? तुम दोनों ऐसे क्यों झगड़ रहे हो?"

"सर! ये मेरी बात सुन ही नहीं रहा है. बस अपनी बात पर अड़ा हुआ है." एक छात्र बोला.

"सर, मैं इसकी बात क्यों सुनूं? ये जो कह रहा है, वो गलत हैं. ऐसे में इसकी बात सुनकर क्या फायदा?" दूसरा छात्र बोला.

इसके बाद दोनों फिर से आपस में उलझ गए. दोनों की सुलह कराने अध्यापक ने उन्हें अपने पास बुलाया. दोनों छात्र अध्यापक की डेस्क के पास जाकर खड़े हो गये. एक डेस्क की एक ओर और दूसरा डेस्क की दूसरी ओर.

अध्यापक ने डेस्क की दराज से एक गेंद निकाली और उसे डेस्क के बीचों–बीच रख दिया. उसके बाद वे दोनों छात्रों से बोले, "इस गेंद को देखकर बताओ, ये किस रंग की है?"

"ये सफेद रंग की गेंद है सर." पहला छात्र बोला.

"नहीं सर, ये तो काली है." दूसरा छात्र बोला.

दोनों के उत्तर एक–दूसरे से भिन्न थे. लेकिन दोनों अपनी बात पर अडिग थे. दोनों में फिर तू–तू मैं–मैं होने लगी. अध्यापक ने दोनों को शांत कर अपने स्थान बदलने को कहा. दोनों ने अपने स्थान बदल लिए.

"अब गेंद को देखकर बताओ कि ये किस रंग की है?" अध्यापक ने फिर से वही प्रश्न दोहराया.

इस बार भी दोनों के जवाब एक–दूसरे से भिन्न थे. अब पहले छात्र ने कहा, "सर, गेंद काली है." और दूसरे छात्र ने कहा, "सर, गेंद सफेद है." लेकिन अबकी बार वे अपने खुद के जवाब से हैरान भी थे.

अध्यापक दोनों को समझाते हुए बोले, "ये गेंद दो रंगों की बनी हुई है. एक तरफ से देखने पर सफेद दिखती है, तो दूसरी तरफ से देखने पर काली. तुम दोनों के जवाब सही हैं. फर्क बस तुम्हारे देखने में है. जिस जगह से तुम इस गेंद को देख रहे हो, वहाँ से तुम्हें ये वैसे रंग की दिखाई दे रही है. जीवन भी ऐसा ही है. जीवन में भी किसी चीज, परिस्थिति या समस्या को देखने का नजरिया भिन्न हो सकता है. ये जरूरी नहीं कि जिसका मत आपसे भिन्न है,

वो गलत है. ये बस नजरिये का फर्क है. ऐसे में हमें विवाद में पड़ने के स्थान पर दूसरे के नजरिये को समझने का प्रयास करना चाहिए. तभी हम किसी की बात बेहतर ढंग से समझ पाएंगे और अपनी बात बेहतर ढंग से समझा पाएंगे."

दोनों छात्रों को अध्यापक की बात समझ में आ गई और दोनों ने अपना झगड़ा भुलाकर सुलह कर ली.

सीख– जीवन में परिस्थितयाँ भिन्न हो सकती हैं. उन परिस्थितियों के प्रति लोगों का नजरिया भिन्न हो सकता है. हम अक्सर किसी भी परिस्थिति को जाने बिना अपनी टिप्पणी दे देते हैं और अपनी बात पर अड़ जाते हैं. ऐसे में विवाद या बहस की स्थिति निर्मित होती है, जो अंततः संबंध बिगड़ने का कारण बन जाती है. इसलिए किसी भी बात पर अपनी टिप्पणी देने के पहले परिस्थिति या मामले की अच्छी तरह जानकारी ले लेना चाहिए. साथ ही यदि मतभिन्नता की स्थिति बने, तो दूसरे के नजरिये को समझने को कोशिश करना चाहिए. ताकि विवाद नहीं बल्कि बेहतर संवाद स्थापित हो सके.

****

आपका काम आपकी जिंदगी का एक बड़ा हिस्सा होगा, और truly & satisfied होने का एक ही तरीका है की आप वो करें जिसे आप सच–मुच एक बड़ा काम समझते हों....और बड़ा काम करने का एक ही तरीका है की आप वो करें जो करना आप enjoy करते हों.

श्रीमति शबीना कौसर
सहा.प्राध्यापक शिक्षा विभाग

जो चाहोगे वही पाओगे

श्रीमति पूर्णिमा कौशिक
सहा.प्राध्यापक शिक्षा विभाग

बहुत पुरानी बात है , एक गांव से नदी गुजरा करती थी जिसके किनारे एक साधु बैठा रहता था और जोर जोर से चिल्लाता रहता था जो चाहोगे वही पाओगे , जो चाहोगे वही पाओगे ,

साधु को गांव के सभी लोग पागल कुछ लोग मूर्ख और ना जाने क्या क्या समझते थे। साधु हमेशा यही चिल्लाता रहता था और भगवान की भक्ति करता रहता थ। बहुत दिन बीत गए एक दिन एक बेरोजगार लड़का वहां से गुजरा उसने साधु की यह बात सुनी और दौड़ा–दौड़ा उनके पास पहुंच गया।

उस लड़के ने साधु से कहा क्या मैं जो चाहूंगा वही पाऊंगा ?

साधु ने मुस्कुराते हुए कहा हां बेटा जो तुम चाहोगे वही तुम पाओगे।

लड़के ने फिर एक बार कहा क्या आप सच कह रहे हैं ? क्या सच में जो मैं चाहुँगा वहीं में पाऊंगा। साधु ने कहा दृ हां जो तुम चाहोगे वही तुम पाओगे। लड़के ने कहा क्या मैं सोने चांदी का बहुत बड़ा व्यापारी बन जाऊंगा। साधु ने कहा हां बेटे तुम अवश्य बनाओगे आज मैं तुम्हें कुछ सोने और चांदी की वस्तुएं दूंगा जिसको तुमने ले जाना और देखना तुम एक बहुत बड़े सोने चांदी के व्यापारी बन जाओगे। लड़के ने अपनी दोनों आंखें बंद की और साधु की ओर हाथ बढ़ा दिए। साधु ने एक हाथ लड़के का पकड़ा और कहा यह लो बेटा यह सोना है इसे समय कहते है। तुम कभी भी इसको हाथ से मत जाने देना, इसका एक–एक पल अपने लक्ष्य प्राप्त करने के लिए उपयोग करना। तुम एक दिन जरूर बहुत बड़े व्यापारी बन जाओगे।

लड़के ने कहा और बाबा चांदी ?

साधु ने लड़के के दूसरे हाथ को पकड़ कर कहा यह लो यह चांदी है। इसे धैर्य कहते है। अगर बहुत मेहनत और वक्त का सही उपयोग करके भी लक्ष्य प्राप्त ना हो तब तक तुम धैर्य रखना और देखना तुम धैर्य में कितनी ताकत है। अगर तुम यह सोना–चांदी हमेशा अपने पास रखोगे तो दुनिया की कोई ताकत तुम्हें बड़ा व्यापारी बनने से नहीं रोक पाएगी।

उस लड़के ने साधु की बात को अपने मस्तिष्क में बहुत अच्छे से बैठा लिया और कभी भी अपने वक्त का ना दुरुपयोग किया ना कभी उसको हाथ से जाने दिया। वह अपने लक्ष्य को पाने के लिए निरंतर ही प्रयास करता रहा और जब वह हार जाता तो वह धैर्य का सहारा लेता और फिर दोबारा कोशिश करता।

देखते ही देखते बहुत कम समय में उस लड़के के अंदर व्यापार करने के वह गुण आ गए जो अभी तक किसी में नहीं थे। उसने बहुत छोटे से काम से शुरुआत की और अपने व्यापार को बड़े स्तर पर ले गया। आज के समय में वह सबसे बड़ा व्यापारी जो उसने उस दिन साधु से मांगा था बन गया।

उसने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अनेक संघर्ष किए ,अनेक चीजें सीखी और ना अपने समय का दुरुपयोग किया ना कभी अपना धैर्य खोया और उसने वही पाया जो वह चाहता था।

शिक्षा –समय और धैर्य वह ताकत है जिसका उपयोग करके हर व्यक्ति अपने मन मुताबिक लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। निरंतर आगे बढ़ते रहना और कभी अपने लक्ष्य से विमुख न होने से ही हमें लक्ष्य प्राप्त होता है।

****

लालची शेर की कहानी

श्रीमति डॉली अहीर
सहा.प्राध्यापक शिक्षा विभाग

एक दिन की बात है गर्मीयों के दिन थे एक शेर को बहुत भूख लगी थी इसलिए वह खाना ढुढने के लिए जंगल में इधर–उधर घुमने लगा कुछ देर बाद घुमते हुए शेर की नजर एक खरगोश पर पड़ी, किन्तु शेर ने खरगोश को खाने के बदले छोड़ दिया क्योंकि शेर को वह खरगोश बहुत ही छोटा लगा। फिर शेर थोड़ा आगे गया और उसकी नजर एक हिरन पर पड़ी वह हिरन बहुत मोटा–ताजा था।

जिसके बाद शेर ने उसका पीछा किया पर क्योंकि वह काफी देर से खाना खोज रहा था तो वह बहुत थक गया था जिसके कारण वह हिरण उसके पकड़ में नहीं आया।

जब शेर को खाने को कुछ नहीं मिला तब वह निराश होकर उसी खरगोश को खाने के विषय में सोचने लगा, और शेर जब वापस उसी स्थान पर गया तो उसे वहां पर कोई भी खरगोश नहीं मिला और अब शेर काफी दुखी हुआ और उसे पछतावा हुआ।

सीख– अत्यधिक लोभ करना, लाभदायक नहीं है।

****

संघर्ष से सफलता– एक व्यापारी राहुल की कहानीं

सूश्री नेहा सिंह
सहा.प्राध्यापक शिक्षा विभाग

एक बड़े शहर में एक युवा व्यक्ति राहुल आया था। वह छोटे से परिवार से था और उसका सपना था कि वह अपना खुद का व्यवसाय शुरू करेगा। उसकी माता–पिता ने उसे हमेशा सच्ची मे. हनत और ईमानदारी के मार्ग पर चलने की सिख दी थी।

राहुल ने कुछ वर्षों तक अलग–अलग व्यवसायों में काम किया और अनुभव जुटाया। उसकी मेहनत और निष्ठा से उसका व्यवसाय भी धीरे–धीरे बढ़ने लगा। लेकिन जैसा कि जीवन में आमतौर पर होता है, उसने भी समस्याओं का सामना किया।

एक दिन, उसका सब कुछ खो दिया। उसका व्यवसाय, पैसे, संपत्ति सब कुछ। यह हादसा उसके लिए एक बड़ी चुनौती थी, लेकिन राहुल हार नहीं माना। उसने फिर से व्यापार शुरू किया, इस बार और भी महनत और आग्रह के साथ।

राहुल ने नए नए रास्तों की खोज की और नये नये आइडियाज का परीक्षण किया। बिना हार माने, उसने अपने सपनों की पुनरागमन की कोशिश की। धीरे–धीरे, उसकी मेहनत और निरंतरता ने उसे फिर से सफलता की ओर बढ़ने में मदद की।

एक दिन, उसका व्यवसाय फिर से उसके पूरे दुनिया में मान बन गया। वह अब अपने साथीयों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बन चुका था। उसकी कड़ी मेहनत, आत्मविश्वास और संकल्प ने उसे उसके लक्ष्य तक पहुँचाया था।

यह कहानी हमें यह सिखाती है कि जीवन में अच्छे और बुरे समय आते–आते हैं, लेकिन हमारी मेहनत, संघर्ष और संकल्प हमें उन समयों से गुजरने में मदद करते हैं। हार न मानने की भावना ही हमें आगे बढ़ने में सहायक साबित हो सकती है, चाहे रास्ते में कितनी भी चुनौतियाँ क्यों न आएं।

****

गलती किसी से भी हो सकती है

श्रीमति सुमिता बेरा
सहा.प्राध्यापक शिक्षा विभाग

एक बार एक राजा भोजन कर रहा था, अचानक खाना परोस रहे सेवक के हाथ से थोड़ी सी सब्जी राजा के कपड़ों पर छलक गई। राजा की भौहे तन चढ़ गयीं। जब सेवक ने यह देखा तो वह थोड़ा घबराया, लेकिन कुछ सोचकर उसने प्याले की बची सारी सब्जी भी राजा के कपड़ों पर उड़ेल दी। अब तो राजा के क्रोध की सीमा न रही।

उसने सेवक से पूछा, –तुमने ऐसा करने का दुस्साहस कैसे किया?

सेवक ने अत्यंत शांत भाव से उत्तर दिया, महाराज ! पहले आपका गुस्सा देखकर मैनें समझ लिया था कि अब जान नहीं बचेगी। लेकिन फिर सोचा कि लोग कहेंगे की राजा ने छोटी सी गलती पर एक बेगुनाह को मौत की सजा दी। ऐसे में आपकी बदनामी होती। तब मैनें सोचा कि सारी सब्जी ही उड़ेल दूं। ताकि दुनिया आपको बदनाम न करे। और मुझे ही अपराधी समझे।

राजा को उसके जबाव में एक गंभीर संदेश के दर्शन हुए और पता चला कि सेवक भाव कितना कठिन है। जो समर्पित भाव से सेवा करता है उससे कभी गलती भी हो सकती है फिर चाहे वह सेवक हो, मित्र हो, या परिवार का कोई सदस्य, ऐसे समर्पित लोगों की गलतियों पर नाराज न होकर उनके प्रेम व समर्पण का सम्मान करना चाहिए

****

गुरू का स्थान

सुश्री अनुपमा उमरे
सहा.प्राध्यापक शिक्षा विभाग

एक राजा था. उसे पढने लिखने का बहुत शौक था. एक बार उसने मंत्री–परिषद् के माध्यम से अपने लिए एक शिक्षक की व्यवस्था की.

शिक्षक राजा को पढ़ाने के लिए आने लगा. राजा को शिक्षा ग्रहण करते हुए कई महीने बीत गए, मगर राजा को कोई लाभ नहीं हुआ

गुरु तो रोज खूब मेहनत करता थे परन्तु राजा को उस शिक्षा का कोई फायदा नहीं हो रहा था.

राजा बड़ा परेशान, गुरु की प्रतिभा और योग्यता पर सवाल उठाना भी गलत था क्योंकि वो एक बहुत ही प्रसिद्द और योग्य गुरु थे. आखिर में एक दिन रानी ने राजा को सलाह दी कि राजन आप इस सवाल का जवाब गुरु जी से ही पूछ कर देखिये.

राजा ने एक दिन हिम्मत करके गुरूजी के सामने अपनी जिज्ञासा रखी, " हे गुरुवर , क्षमा कीजियेगा , मैं कई महीनो से आपसे शिक्षा ग्रहण कर रहा हूँ पर मुझे इसका कोई लाभ नहीं हो रहा है. ऐसा क्यों है ?"

गुरु जी ने बड़े ही शांत स्वर में जवाब दिया, " राजन इसका कारण बहुत ही सीधा सा है"

" गुरुवर कृपा कर के आप शीघ्र इस प्रश्न का उत्तर दीजिये ", राजा ने विनती की.

गुरूजी ने कहा, "राजन बात बहुत छोटी है परन्तु आप अपने 'बड़े' होने के अहंकार के कारण इसे समझ नहीं पा रहे हैं और परेशान और दुखी हैं. माना कि आप एक बहुत बड़े राजा हैं. आप हर दृष्टि से मुझ से पद और प्रतिष्ठा में बड़े हैं परन्तु यहाँ पर आप का और मेरा रिश्ता एक गुरु और शिष्य का है.

गुरु होने के नाते मेरा स्थान आपसे उच्च होना चाहिए, परन्तु आप स्वंय ऊँचे सिंहासन पर बैठते हैं और मुझे अपने से नीचे के आसन पर बैठाते हैं. बस यही एक कारण है जिससे आपको न तो कोई शिक्षा प्राप्त हो रही है और न ही कोई ज्ञान मिल रहा है. आपके राजा होने के कारण मैं आप से यह बात नहीं कह पा रहा था.

कल से अगर आप मुझे ऊँचे आसन पर बैठाएं और स्वंय नीचे बैठें तो कोई कारण नहीं कि आप शिक्षा प्राप्त न कर पायें."

राजा की समझ में सारी बात आ गई और उसने तुरंत अपनी गलती को स्वीकारा और गुरुवर से उच्च शिक्षा प्राप्त की।

****

सुई का पेड़

श्रीमति नबमिता मईति
सहा.प्राध्यापक शिक्षा विभाग

पुराने समय की बात है, दो भाई थे जो एक जंगल के नजदीक रहते थे, बड़ा भाई अपने छोटे भाई के प्रति बहुत धूर्त था, और उसका सारा खाना खा जाता था और उसके सभी अच्छे कपड़े भी ले लेता था। एक दिन, बड़ा भाई, बाजार में बेचने के लिए , कुछ लकड़ियाँ इक्कठा करने जंगल में गया। जैसे ही वह एक पेड़ से दूसरे पेड़ की शाखाएं काटकर आगे बढ़ा , उसकी मुलाकात एक जादुई पेड़ से हुई। पेड़ ने उससे कहा, "हे! दयालु महोदय, कृपया मेरी शाखाओं को ना काटें। यदि आप मुझे छोड़ देते हैं, तो मैं आपको अपने सुनहरे सेब दूंगा। बड़ा भाई मान गया लेकिन वह पेड़ द्वारा दिए गए सेबों की संख्या से निराश था, लालच ने उस पर काबू पा लिया, और उसने पेड़ को डराया कि यदि पेड़ ने उसे और सेब नहीं दिए तो वह पूरी शाखा काट देगा। सेब देने के बजाय, जादुई पेड़ ने उसपर सैकड़ों छोटी सुइयों की बौछार कर दी । बड़ा भाई दर्द से कराहते हुए जमीन पर गिर गया और धीरे–धीरे सूरज ढलने लगा।

यहाँ छोटा भाई चिंतित हो गया और अपने बड़े भाई की तलाश में निकल पड़ा, उसने अपने भाई को शरीर पर सैकड़ों सुइयों के साथ पाया। वह उसकी तरफ दौड़ा और उसने प्रत्येक सुई बहुत सावधानी और प्यार से निकाली। सारी सुईयाँ निकालने के बाद, बड़े भाई ने उसके साथ बुरा व्यवहार करने के लिए माफी मांगी और बेहतर इंसान बनने का वादा भी किया। पेड़ ने बड़े भाई के दिल में आया बदलाव देखा और उन्हें सभी सुनहरे सेब दे दिए, जिससे उन्हें कभी कोई कमी महसूस नहीं हुई।

कहानी से मिली सीख–

नम्र और दयालु होना महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका फल हमेशा अच्छा ही मिलेगा।

****

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनमोल विचार

सुश्री भावना हेंवार
सहा.प्राध्यापक शिक्षा विभाग

- शिक्षक वो नहीं, जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन डाले, बल्कि वास्तविक शिक्षक वो है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे।
- किताबें पढ़ने से हमें एकांत में विचार करने की आदत और सच्ची खुशी मिलती है।
- शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग किया जा सकता है। इसलिए विश्व को एक ही इकाई मानकर शिक्षा का प्रबंधन करना चाहिए।
- हर्ष और आनंद से परिपूर्ण जीवन केवल ज्ञान और विज्ञान के आधार पर संभव है।
- पुस्तकें वो साधन हैं, जिनके माध्यम से हम विभिन्न संस्कृतियों के बीच पुल का निर्माण कर सकते हैं।
- ज्ञान हमें शक्ति देता है, प्रेम हमें परिपूर्णता देता है।
- सच्चा गुरु वह है जो हमें खुद के बारे में सोचने में मदद करता है।
- जब हम ये सोचते हैं कि हम सब जानते हैं तब हमारा सीखना बंद हो जाता है।
- अच्छा टीचर वो है, जो ताउम्र सीखता रहता है और अपने छात्रों से सीखने में भी कोई परहेज नहीं दिखाता।
- शिक्षा के द्वारा ही मानव के मस्तिष्क का सदुपयोग किया जा सकता है। इसलिए संसार को एक ही इकाई मानकर शिक्षा का प्रबंधन करना चाहिए।

****

अपने अंदर का अहंकार मिटाना है तो स्वामी विवेकानंद के इस दोस्त की कहानी पढ़िए –

डॉ. कबिता तिवारी
सहा.प्राध्यापक शिक्षा विभाग

स्वामी विवेकानंद एक डॉक्टर का बहुत सम्मान करते थे। वह उनसे कहते थे कि आप मन, वचन, कर्म और आचरण से संन्यासी हैं, मुझे आपके भीतर बड़े सद्गुणों के दर्शन होते हैं। डॉक्टर साहब बेहद साधारण तरीके से रहते थे। उन्हें देखकर कोई यह अंदाजा नहीं लगा पाता था कि वह कोई बहुत बड़े डॉक्टर हैं। एक दिन वह पैदल अपने दवाखाने जा रहे थे। बारिश होने वाली थी, एक आदमी को अपनी छत ठीक करनी थी। मदद के लिए उसने एक मजदूर को बुलाया था, और दरवाजे पर खड़ा उसका इंतजार कर रहा था।

उधर से जा रहे डॉक्टर साहब को सामान्य व्यक्ति समझ उनसे बोला कि छत ठीक करने में आप मेरी मदद कर दें। मजदूर को बुलाया था वह आया नहीं। मैं आपको पारिश्रमिक दे दूंगा। डॉक्टर उस आदमी के कहे अनुसार छत ठीक कराने में लग गए। उसी सड़क से वहां के एक बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति गुजर रहे थे। डॉक्टर साहब को यह सब करते हुए देख वह बोले, 'यह आप क्या कर रहे हैं?' जवाब मिला, 'आज मुझे रोगियों के इलाज बदले यह काम ज्यादा ठीक लगा। इस सज्जन ने मुझसे सहायता मांगी, सो मैं मदद कर रहा हूं।'

जब यह बात झोपड़ी वाले उस व्यक्ति ने सुनी तो वह पानी–पानी हो गया। वह उनके पैर पकड़ कर बोला, 'मुझे नहीं मालूम था कि आप इतने बड़े आदमी हैं।' डॉक्टर साहब ने कहा, 'मैं और मेरे एक मित्र विवेकानंद मानते हैं कि धर्म को किताबों से निकालकर आचरण में ढालना होगा। आपने तो मुझे अपने धर्म को आचरण में ढालने का सुअवसर दिया। मुझे आज बहुत बड़ा लाभ हुआ है।' यह थे बंगाल के प्रख्यात डॉक्टर नाग। बाद में विवेकानंद ने उनकी यह कहानी सुनाई और संदेश दिया कि हम लोगों के जीवन में जो सबसे खराब ग्रह है, वह है अहंकार। और अहंकार सिर्फ सेवा से ही मिट सकता है।

****

कंप्यूटर का उपयोग व महत्व

श्री वैभव गुप्ता
सहायक प्राध्यापक (कम्प्यूटर विज्ञान)

प्रस्तावना

पूरे मानव बिरादरी के लिये विज्ञान का अनोखा और पथप्रदर्शन करने वाला उपहार है कंप्यूटर। ये किसी भी प्रकृति का कार्य कर सकता है। किसी के भी द्वारा इसे संभालना सरल है और सीखने के लिये बहुत कम समय लगता है। अपने सुगमता और कार्य क्षमता के कारण इसका प्रयोग व्यापक तौर पर होता है जैसे– ऑफिस, बैंक, होटल, शिक्षण संस्थान, स्कूल, कॉलेज, दुकान, उद्योग आदि। कई लोग अपने बच्चों के लिये लैपटॉप और डेस्कटॉप खरीदते है जिससे अपनी पढ़ाई से संबंधित कार्य और कंप्यूटरीकृत विडियों गेमों का आनंद ले सकें।

विद्यार्थी के द्वारा कंप्यूटर का उपयोग

कंप्यूटर एक बड़ा शब्दकोश और बड़ा स्टोरेज डिवाइस है जो किसी भी तरह के डेटा को सुरक्षित रखने के लिये है जैसे– कोई भी जानकारी, पढ़ाई से संबंधित सामग्री, प्रोजेक्ट, फोटो, विडियो, गाना, खेल, आदि।

ये एक इलेक्ट्रॉनिक मशीन है जो गणना करने तथा बड़ी समस्याओं को सुलझाने में दक्ष है। ये हमारे कौशल को बढ़ाने में और आसानी से जानकारी प्राप्त करने में भी हमारी मदद करता है। ये एक डेटा आधारित मशीन है। ये हमें कई सारे टूल्स उपलब्ध कराता है जैसे– टेक्स्ट टूल्स, पेंट टूल्स आदि जो बच्चों के लिये बहुत फायदेमंद है और विद्यार्थी इसे अपमे स्कूली तथा प्रोजेक्ट कार्यों में काफी प्रभावपूर्ण रुप में उपयोग कर सकते हैं।

कंप्यूटर का महत्व

कार्य स्थल, शिक्षा के क्षेत्र में तथा निजी उपयोग के लिए कंप्यूटर का बहुत ही महत्व है। पुराने समय में हम सारे काम अपने हाथ से करते थे लेकिन आज कंप्यूटर की सहायता से खातों के प्रबंधन, डेटाबेस बनाने, आवश्यक जानकारी संग्रहीत करने जैसे विभिन्न उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कंप्यूटर का उपयोग किया जाता है। आजकल हर कोई इंटरनेट के जरिये कंप्यूटर पर काम करना आसान मानता है। वास्तव में आज के समय कंप्यूटर हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है।

निष्कर्ष

हम इसका प्रयोग बड़े और छोटे गणितीय गणनाओं के लिये सटीक ढंग से कर सकते है। इसका उपयोग मौसम की भविष्यवाणी, किताब, न्यूज

पेपर, डाइग्नोजिंग बिमारी की छपाई आदि के लिये किया जा सकता है। इसका इस्तेमाल दुनिया के किसी भी कोने से ऑनलाइन रेलवे आरक्षण, होटल या रेस्टोरेंट की बुकिंग के लिये किया जाता है। बड़ी एमएनसी कंपनियों में भी इसका प्रयोग व्यापक है जिसमें खाता, इनवॉइस, पे–रोल, स्टॉक नियंत्रण आदि के लिये होता है।

****

लडकें की तरह लड़की भी

श्रीमति सुषमा दुबे
सहायक प्राध्यापक (कम्प्यूटर विज्ञान)

लडकें की तरह लड़की भी, मुट्ठी बांध के पैदा होती हैं।
लडकें की तरह लड़की भी, माँ की गोद में हसती रोती हैं।।

करते शैतानियाँ दोनों एक जैसी।
करते मनमानियां दोनों एक जैसी।।

दादा की छड़ी दादी का चश्मा तोड़ते हैं।
दुल्हन के जैसे माँ का आँचल ओढ़ते हैं।।

भूक लगे तो रोते हैं, लोरी सुन कर सोते हैं।
आती हैं दोनों की जवानी, बनती हैं दोनों की कहानी।।

दोनों कदम मिलकर चलते हैं।
दोनों दिपक बनकर जलते हैं।।

लड़के की तरह लड़की भी नाम रोशन करती हैं।
कुछ भी नहीं अंतर फिर क्यूँ जन्म से पहले मारी जाती हैं।।

बेटियां बेटियां बेटियां .....

****

भारत रत्न प्राप्त डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम

अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर, 1931 को तमिलनाडु के एक गाँव धनुषकोडी में हुआ था। इनके पिता, मछुआरों को किराए पर नाव देते थे। कलाम ने अपनी पढ़ाई के लिए धन की पूर्ति हेतु अखबार बेचने का कार्य भी किया। डॉ. कलाम ने जीवन में अनेक चुनौतियों का सामना किया। उनका जीवन सदा संघर्षशील रहने वाले एक ऐसे व्यक्ति की कहानी है, जिसने कभी हार नहीं मानी तथा देशहित में अपना सर्वस्व न्योछावर करते हुए, सदा उत्कृष्टता के पथ पर चलते रहे। 71 वर्ष की आयु में भी वे अथक परिश्रम करते हुए भारत को सुपर पावर बनाने की ओर प्रयासरत थे।

भारत रत्न डॉ. अब्दुल कलाम भारत के 11वें राष्ट्रपति बने। वे भारत रत्न से सम्मानित होने वाले तीसरे राष्ट्रपति हैं। भारत के मिसाइल कार्यक्रम के जनक, डॉ. कलाम ने देश को 'अग्नि' एवं 'पृथ्वी' जैसी मिसाइलें देकर, चीन एवं पाकिस्तान को इनकी रेंज में लाकर, दुनिया को चौंका दिया।

एक बार एयरफोर्स के पायलेट के साक्षात्कार में 9वें नम्बर पर आने के कारण (कुल आठ प्रत्याशियों का चयन करना था) उन्हें निराश होना पड़ा था।

वे ऋषिकेश बाबा शिबानन्द के पास चले गए एवं अपनी व्यथा उन्हें सुनाई।

बाबा ने उन्हें कहा :–

Accept your destiny and go ahead with your life- You are not destined to become an Airforce Pilot- What you are destined to become is not revealed now but it is pre-determined- Forget this failure as it was essential to lead you to your existence- Become one with yourself my son- Surrender yourself to the wish of God.

बाबा शिवानन्द का कहने का अर्थ यह था कि असफलता से निराश होने की आवश्यकता नहीं। यह असफलता आपकी दूसरी सफलताओं के द्वार खोल सकती है। तुम्हें जीवन में कहाँ पहुँचना है, इसका पता नहीं। आप कर्म करो, ईश्वर पर विश्वास करो।

डॉ. कलाम का जीवन, हर उस नवयुवक के लिए आदर्श प्रेरणा स्रोत है, जो अपने जीवन में एक असफलता मिलने पर ही निराश हो जाते हैं। डॉ. कलाम ने अपने सारे जीवन में निरूस्वार्थ सेवा कार्य किया। उनका राष्ट्र प्रेम और उनका देशभक्ति का जज्बा हर भारतीय के लिए सबक एवं प्रेरणा का पुंज है और हमेशा रहेगा।

डॉ.वंदना कश्यप
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य संकाय)

सफलता का मार्ग

श्री प्रवीण बिस्वास
सहायक प्राध्यापक (विज्ञान संकाय)

एक बार की बात है, एक छोटे से गांव में एक युवा लड़का अपने गरीब माता–पिता के साथ परिवार में रहता था, जहां आर्थिक संकट के दिन चलना सामान्य था। लड़के के मन में बड़े–बड़े सपने थे, वह एक सफल व्यापारी बनना चाहता था।

लड़का रोजाना ग्रंथालय जाता था और किताबें पढ़कर अपने ज्ञान को बढ़ाता था। उसके पास कुछ भी धन नहीं था, लेकिन उसने किसी भी मुसीबत को हराने का संकल्प बनाया था। उसने एक छोटे से दुकान में काम करना शुरू किया और अपनी मेहनत और समर्पण से अपनी कमाई बचाने लगा।

वह दिन रात मेहनत करता, धैर्य रखता और निरंतर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहता। लड़के के माता–पिता उसके सामरिकता और परिश्रम को देखकर गर्व महसूस करते थे और उसे हमेशा समर्थन देते थे।

समय बीतता गया और लड़का बड़ा हो गया। वह जहा काम करता था उसने अपने बचत के पैसे से वही व्यापर करना शुरू कर दिया। देखते ही देखते वह अब एक सफल व्यापारी बन चुका था, जिसने अपने सपनों को हकीकत में बदला था। उसने अपनी दुकान को बड़ा कर दिया, कर्मचारियों को रखा और अपने व्यापार को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया।

लड़के की कठिनाइयों और संघर्षों भरी यात्रा उसे यह सिखाती रही कि सफलता पाने के लिए हमें धैर्य और संघर्ष करना होता है। धन, सामर्थ्य या सामग्री की कमी होने के बावजूद, लड़का अपने सपनों को प्राप्त करने के लिए सदैव मेहनत करता रहा और अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहा।

इस कहानी से हमें यह अद्भुत सन्देश प्राप्त होता है कि सफलता पाने के लिए हमें निरंतर प्रयास करना चाहिए। हमें अपने सपनों की प्राथमिकता देनी चाहिए और उन्हें हासिल करने के लिए हमेशा मेहनत और समर्पण दिखाना चाहिए। चाहे जीवन के किसी भी क्षेत्र में हो, संघर्ष और परिश्रम हमारी सफलता की मुख्य चाबी होती हैं।

****

सफलता के सूत्र

श्रीमति प्रमिला शर्मा
सहायक प्राध्यापक (विज्ञान संकाय)

एक समय की बात है, एक छोटे से शहर में एक व्यापारी रहता था। उसका नाम राजेश था। राजेश के पास कोई बड़ा व्यापार नहीं था, लेकिन उसकी मेहनती और जुनून से भरी आवाज थी। उसका सपना था कि एक दिन वह एक अपना व्यापार खोलेगा और सफलता की ऊंचाइयों को छू जाएगा।

राजेश ने कई सालों तक एक नौकरी की है, लेकिन उसकी रूचि व्यापार में थी। वह हमेशा सोचता रहता था कि उसे क्या करना चाहिए ताकि वह अपने सपनों को पूरा कर सके।

एक दिन, राजेश ने निर्णय लिया कि वह अपना व्यापार शुरू करेगा। उसने अपने बचत के पैसों का इस्तेमाल करके एक छोटी सी दुकान खरीदी और उसमें सामान बेचने की शुरुआत की।

पहले कुछ महीनों में, राजेश का व्यापार थोड़ा सा उछल–कूद के साथ चला, लेकिन जल्द ही उसे गाही बनाने का समय आया। राजेश ने खुद को सीखने, बढ़ते हुए प्रौद्योगिकी के उपयोग, और ग्राहकों की आवश्यकताओं को समझने में जुटा दिया। वह मान्यता प्राप्त करने के लिए गुणवत्ता और उत्कृष्टता पर ध्यान देने लगा।

इसके परिणामस्वरूप, उसकी दुकान का नाम शीघ्र ही लोकप्रियता में आया और लोग उसकी सेवाओं की प्रशंसा करने लगे। राजेश के व्यापार में सफलता की लहर आई और उसका व्यापार धीरे–धीरे बढ़ता गया। उसने दूसरी दुकान खोली और और अपने व्यापार की विस्तार की।

राजेश की सफलता का राज उसकी मेहनत, समर्पण, और आत्म. विश्वास था। वह कभी नहीं हारा और हमेशा अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहा। वह अपने संगठन को विकसित करने के लिए नए आइडियाओं पर काम किया और नई बाजारों में उत्पादों की पेशकश की।

आज, राजेश एक सफल व्यापारी के रूप में पहचाना जाता है। उसकी कहानी और उसकी सफलता दूसरों को प्रेरित करने के लिए एक मिसाल के रूप में साझा की जाती है। राजेश ने सिद्ध किया कि मेहनत, आत्मविश्वास, और निरंतर प्रयास ही सफलता की कुंजी होती है।

****

शिक्षा का महत्व

सुश्री वंदना कश्यप
सहायक प्राध्यापक (कला संकाय)

गाँव के एक छोटे से लड़के नामक आदित्य का सपना था कि वह डॉक्टर बनेंगे। उसके पास बहुत ईमानदार माता–पिता थे, लेकिन उनके पास आर्थिक संबंधों की कमी थी।

आदित्य ने हार नहीं मानी और उसने बहुत मेहनत करते हुए स्कूल जाना शुरू किया। उसने स्कूल के अध्यापकों से मदद मांगी और सुनिश्चित किया कि उसका पढ़ाई का बोझ उसके माता–पिता के ऊपर नहीं आता।

अपनी मेहनत और उदाहरणशीलता के कारण, आदित्य ने एक स्कॉलरशिप प्राप्त की और आगे की पढ़ाई के लिए अच्छे कॉलेज में दाखिला प्राप्त किया। उसने अपने सपने को पूरा करने में सफलता प्राप्त की और डॉक्टर बन गया।

पुस्तकालय

श्री गुलशन कुमार गेंदले
पुस्तकालय अध्यक्ष

पुस्तकालय (पुस्तक आलय) शब्द का अर्थ हैं पुस्तकों का घर. वह स्थान जहाँ पुस्तकों का संग्रह किया जाता हैं. पुस्तकालय कहा जाता हैं. पुस्तकालय में अनेक विषयों की पुस्तकें विषयानुसार क्रम से लगी रहती हैं. इनमें से लोग अपनी रूचि और आवश्यकता के अनुसार पुस्तकें पढ़कर हमारा ज्ञान बढ़ाते हैं.

पुस्तकालयों के प्रकार (types of library in hindi) पुस्तकालय मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं,

निजी पुस्तकालय सार्वजनिक पुस्तकालय.

1. निजी पुस्तकालय वह होता हैं जो अपने ही घर के लिए स्थापित करते हैं. ऐसे पुस्तकालय में केवल एक ही व्यक्ति या परिवार की रूचि की पुस्तके होती हैं.
2. सार्वजनिक पुस्तकालय आम जनता के लिए होता हैं. ऐसे पुस्तकालयों का संचालन तीन तरह से होता हैं. व्यक्तिगत स्तर पर, पंचायती स्तर पर और सरकारी स्तर पर. कुछ धनी लोग अपने ही पैसों से पुस्तकालय खुलवाकर लोगों की मदद करते हैं. ये व्यक्तिगत पुस्तकालय कहलाते हैं.

मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर तथा विद्यालयों द्वारा संचालित पुस्तकालय पंचायती होते हैं. इनके अतिरिक्त सरकार भी कुछ पुस्तकालय चलाती हैं.

पुस्तकालय की उपयोगिता– पुस्तकालय ज्ञान के भंडार होते हैं. जिनके पास विद्यालय जाने का समय नही हैं, वे लोग पुस्तकालय की पुस्तकों से अपना ज्ञान बढ़ाते हैं. आज पुस्तकों के मूल्य बढ़ गये हैं.

इसलिए सब लोग उन्हें खरीद नही पाते हैं. किन्तु पुस्तकालय से पुस्तकें लेकर तो सभी पढ़ सकते हैं. इस प्रकार निर्धन व्यक्तियों के लिए पुस्तकालय विशेष लाभदायक होते हैं.

पुस्तक पढ़ना खाली समय बिताने का एक अच्छा साधन हैं. जब हमारे पास कोई काम नही होता है तो हमारा दिमाग बहुत सी अनुचित बाते सोचने लगता हैं. इस प्रकार पुस्तकालय हमें बुरी आदतों से बचाकर अच्छा नागरिक बनाते हैं.

पुस्तकालय में वे ही लोग आते हैं. जो ज्ञान बढ़ाना तथा स्वयं को सुधारना चाहते हैं. इस प्रकार पुस्तकालय में जाने से हमारी भले लोगों से भेट होती हैं इससे आपसी प्रेम भी बढ़ता हैं.

उपसंहार– पुस्तकालय हमारे सच्चे मित्र होते हैं. वे हमें उबने नही देते. वे हमारा मनोरंजन करते तथा ज्ञान बढ़ाते हैं.

आखिर साँस तक प्रयास न छोड़ें

श्री मोरजध्वज जयसवाल
सहायक ग्रेड 3

नए पर्वतारोहियों का एक समूह पहाड़ों पर चढ़ाई कर रहा था । सभी चोटियों को लेकर बहुत रोमांचित थे । अचानक ही वहां बर्फीला तूफान आ गया । अगले ही दिन से सबकी हिम्मत जवाब दे गयी और उन्होंने वापिस उतरने का फैसला कर लिया । उनमें से एक पर्वतारोही ने इस फैसले को मानने से इनकार कर दिया । उसने कहा– चोटी दूर नहीं है और मैं वापिस नहीं मुड़ना चाहता । यह बोलकर वह चढ़ता चला गया ।

जब वह जीतकर लौटा तो उसके दोस्तों ने पूछा– तुम्हें डर नहीं लगा?

तब उसने कहा– डर तो लगा था लेकिन मुझे एक कथन भी पता था ।

दोस्तों ने पुछा – कौन–सी कथन?

उसने जवाब देते हुआ कहा– "अकसर लोग तब प्रयास करना छोड़ देते हैं, जब वे मंजिल के सबसे ज्यादा करीब होते हैं।" मैं यह जोखिम नहीं लेना चाहता था इसलिए मैं आगे गया और जीत गया।

उसके दोस्तों को अंत समय पर वापिस मुड़ जाने का बहुत पछ. तावा हो रहा था ।

दोस्तों, हमारी जीवन में हमारे साथ ऐसा कई बार होता है जब हम मंजिल के करीब पहुंचकर प्रयास करना छोड़ देते हैं या फिर अपना लक्ष्य बदल देते हैं । लेकिन यदि हम थोड़ा–सा ही और प्रयास करें तो हम जीत सकते हैं पर हम उस समय

जीत को देखने के बजाय यह देखते हैं कि ज्यादातर लोग आगे असफल हो रहे हैं और हमें लगने लगता है कि हम भी उन्हीं की तरह असफल हो जायेंगे इसलिए हम आगे कोशिश भी नहीं करते । बस यह सोचकर प्रयास करना छोड़ देते हैं कि हमारा भी कुछ नहीं होने वाला । आगे बढ़िये, रुकिए और थकिये मत.. बस प्रयास करते रहिये.. जीत के करीब पहुंचकर पीछे मत मुड़िये.....

इस देश को रखना मेरे बच्चों संभाल के

श्री राकेश बघेल
लिपिक

इस देश को रखना मेरे बच्चों संभाल के
तुम ही भविष्य हो मेरे भारत विशाल के,
इस देश को रखना मेरे बच्चों संभाल के।
देखो कहीं बरबाद न होवे ये बगीचा ,
इसको हृदय के खून से बापू ने है सींचा
रक्खा है ये चिराग शहीदों ने बाल के,
इस देश को रखना मेरे बच्चों संभाल के।
दुनियाँ के दांव पेंच से रखना न वास्ता,
मंजिल तुम्हारी दूर है लंबा है रास्ता ,
भटका न दे कोई तुम्हें धोखे में डाल के,
इस देश को रखना मेरे बच्चों संभाल के।
एटम बमों के जोर पे ऐंठी है ये दुनियाँ ,
बारूद के इक ढेर पे बैठी है ये दुनियाँ,
तुम हर कदम उठाना जरा देखभाल के,
इस देश को रखना मेरे बच्चों संभाल के।
आराम की तुम भूल–भुलैया में न भूलो ,
सपनों के हिंडोलों में मगन हो के न झूलो ,
अब वक्त आ गया मेरे हंसते हुए फूलों ,
उठो छलांग मार के आकाश को छू लो,
तुम गाड़ दो गगन में तिरंगा उछाल के ,
इस देश को रखना मेरे बच्चों संभाल के।

****

सकारात्मकता से आती है शांति

श्री गौकरण यादव
लिपिक

किसी ने सच ही कहा है ।

"शांति का कोई मार्ग नहीं हैं, बल्कि शांति खुद ही एक मार्ग हैं."

शांति की शुरुआत मुस्कराहट के साथ होती है. सुख प्राप्ति का सबसे अच्छा मार्ग मन की शांति है. मन की शांति आपके मन से ही शुरू होती है और मन पर ही खत्म होती है. अगर आपकी लाइफ में शांति है तो आप संसार के सबसे सुखी व्यक्ति हैं.

जीवन के प्रति सकारात्मकता और मन की शांति का आपस में गहरा संबंध है. एक सकारात्मक सोच रखने वाला व्यक्ति बड़ी से बड़ी मुसीबतों को भी आसानी से पार कर जाता है. मन को शांति रखने की कला आती है वो सच्चे अर्थों में एक बहुत ही चतुर इन्सान है. ऐसा व्यक्ति हरदम खुश रहता है और नकारात्मकता उसके पास भी नहीं फटकती. अगर आप positive thinking और peace of mind दोनों को maintain कर सकते हैं तो आप अपनी life में खुश रहना सीख सकते हैं.

अगर आप सोचते हैं कि आप हर समय परेशान नहीं रहें तो आपको खुद को शांत रखने की कला सीखनी होगी.

एक शांत और प्रसन्न चित्त मष्तिष्क बड़ी से बड़ी समस्या को भी आसानी से solve कर लेता है. Fresh mind में ही हम सही निर्णय लेने में सक्षम होते हैं. इसलिए मन की शांति के महत्व को समझना बहुत जरूरी है.

****

माँ की सीख

श्री भुपेन्द्र यादव
लिपिक

ईश्वरचंद विद्यासागर के बचपन की यह एक सच्ची घटना है। एक सवेरे उनके घर के द्वार पर एक भिखारी आया। उसको हाथ फैलाये देख उनके मन में करुणा उमड़ी। वे तुरंत घर के अंदर गए और उन्होंने अपनी माँ से कहा कि वे उस भिखारी को कुछ दे दें। माँ के पास उस समय कुछ भी नहीं था सिवाय उनके कंगन के। उन्होंने अपना कंगन उतारकर ईश्वरचंद विद्यासागर के हाथ में रख दिया और कहा–" जिस दिन तुम बड़े हो जाओगे, उस दिन मेरे लिए दूसरा बनवा देना अभी इसे बेचकर जरूरतमंदों की सहायता कर दो।"

बड़े होने पर ईश्वरचंद विद्यासागर ने अपनी पहली कमाई से अपनी माँ के लिए सोने के कंगन बनवाकर ले गए और उन्होंने माँ से कहा– माँ! आज मैंने बचपन का तुम्हारा कर्ज उतार दिया । उनकी माँ ने कहा– "बेटे! मेरा कर्ज तो उस दिन उतर पायेगा, जिस दिन किसी और जरूरतमंद के लिए मुझे ये कंगन दोबारा नहीं उतारने होंगे। "

माँ की सीख ईश्वरचंद विद्यासागर के दिल को छू गयीं और उन्होंने प्रण किया कि वे अपना जीवन गरीब–दुखियों की सेवा करने और उनके कष्ट हरने में व्यतीत करेंगे और उन्होंने अपना सारा जीवन ऐसा ही किया।

महापुरूषों के जीवन कभी भी एक दिन में तैयार नहीं होते। अपना व्यक्तित्व गढ़ने के लिए वे कई कष्ट और कठिनाइयों के दौर से गुजरते हैं और हर महापुरूष का जीवन कहीं न कहीं अपनी माँ की शिक्षाओं से बहुत प्रभावित रहता है।

****

श्री अनुप मसीह
लैब सहायक

मनुष्यों के जीवन का सफर सुहाना जरुर होता है लेकिन इस सफर में कब, कहां, कैसे गढ्ढे आ जाए इसकी किसी को खबर नहीं होती है. ऐसे समय में कभी भी जोखिम लेने से डरना नहीं चाहिए, अगर आप सफल हो जाते हैं तो दुसरो का नेतृत्व करते हैं। अगर असफल होते है तो आप दूसरों का मार्ग दर्शन कर सकते हैं। दोनों ही मामलों में जीत आपकी ही है. बस खुद पर विश्वास रखिए, विश्वास वो शक्ति है जिससे उजड़ी हुई दुनिया में भी प्रकाश किया जा सकता है।

****

आखिरी प्रयास (कहानी)

एक समय की बात है. एक राज्य में एक प्रतापी राजा राज करता था. एक दिन उसके दरबार में एक विदेशी आगंतुक आया और उसने राजा को एक सुंदर पत्थर उपहार स्वरूप प्रदान किया. राजा वह पत्थर देख बहुत प्रसन्न हुआ. उसने उस पत्थर से भगवान विष्णु की प्रतिमा का निर्माण कर उसे राज्य के मंदिर में स्थापित करने का निर्णय लिया और प्रतिमा निर्माण का कार्य राज्य के महामंत्री को सौंप दिया. महामंत्री गाँव के सर्वश्रेष्ठ मूर्तिकार के पास गया और उसे वह पत्थर देते हुए बोला, "महाराज मंदिर में भगवान विष्णु की प्रतिमा स्थापित करना चाहते हैं।

सात दिवस के भीतर इस पत्थर से भगवान विष्णु की प्रतिमा तैयार कर राजमहल पहुँचा देना. इसके लिए तुम्हें 50 स्वर्ण मुद्रायें दी जायेंगी." 50 स्वर्ण मुद्राओं की बात सुनकर मूर्तिकार खुश हो गया और महामंत्री के जाने के उपरांत प्रतिमा का निर्माण कार्य प्रारंभ करने के उद्देश्य से अपने औजार निकाल लिए. अपने औजारों में से उसने एक हथौड़ा लिया और पत्थर तोड़ने के लिए उस पर हथौड़े से वार करने लगा. किंतु पत्थर जस का

तस रहा. मूर्तिकार ने हथौड़े के कई वार पत्थर पर किये. किंतु पत्थर नहीं टूटा.

पचास बार प्रयास करने के उपरांत मूर्तिकार ने अंतिम बार प्रयास करने के उद्देश्य से हथौड़ा उठाया, किंतु यह सोचकर हथौड़े पर प्रहार करने के पूर्व ही उसने हाथ खींच लिया कि जब पचास बार वार करने से पत्थर नहीं टूटा, तो अब क्या टूटेगा. वह पत्थर लेकर वापस महामंत्री के पास गया और उसे यह कह वापस कर आया कि इस पत्थर को तोड़ना नामुमकिन है. इस. लिए इससे भगवान विष्णु की प्रतिमा नहीं बन सकती. महामंत्री को राजा का आदेश हर स्थिति में पूर्ण करना था. इसलिए उसने भगवान विष्णु की प्रतिमा निर्मित करने का कार्य गाँव के एक साधारण से मूर्तिकार को सौंप दिया।

पत्थर लेकर मूर्तिकार ने महामंत्री के सामने ही उस पर हथौड़े से प्रहार किया और वह पत्थर एक बार में ही टूट गया. पत्थर टूटने के बाद मूर्तिकार प्रतिमा बनाने में जुट गया. इधर महामंत्री सोचने लगा कि काश, पहले मूर्तिकार ने एक अंतिम प्रयास और किया होता, तो सफल हो गया होता और 50 स्वर्ण मुद्राओं का हकदार बनता।

शिक्षा– मित्रों, हम भी अपने जीवन में ऐसी परिस्थितियों से दो–चार होते रहते हैं. कई बार किसी कार्य को करने के पूर्व या किसी समस्या के सामने आने पर उसका निराकरण करने के पूर्व ही हमारा आत्मविश्वास डगमगा जाता है और हम प्रयास किये बिना ही हार मान लेते हैं. कई बार हम एक–दो प्रयास में असफलता मिलने पर आगे प्रयास करना छोड़ देते हैं. जबकि हो सकता है कि कुछ प्रयास और करने पर कार्य पूर्ण हो जाता या समस्या का समाधान हो जाता. यदि जीवन में सफलता प्राप्त करनी है, तो बार–बार असफल होने पर भी तब तक प्रयास करना नहीं छोड़ना चाहिये, जब तक सफलता नहीं मिल जाती. क्या पता, जिस प्रयास को करने के पूर्व हम हाथ खींच ले, वही हमारा अंतिम प्रयास हो और उसमें हमें कामयाबी प्राप्त हो जाये।

सुश्री सरोजनी वर्मा
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य संकाय)

****

हमेंशा सीखते रहों –

श्री प्रवीण बिस्वास
सहायक प्राध्यापक (विज्ञान संकाय)

एक बार गाँव के दो व्यक्तियों ने शहर जाकर पैसे कमाने का निर्णय लिया. शहर जाकर कुछ महीने इधर–उधर छोटा–मोटा काम कर दोनों ने कुछ पैसे जमा किये. फिर उन पैसों से अपना–अपना व्यवसाय प्रारंभ किया. दोनों का व्यवसाय चल पड़ा. दो साल में ही दोनों ने अच्छी खासी तरक्की कर ली.

व्यवसाय को फलता–फूलता देख पहले व्यक्ति ने सोचा कि अब तो मेरे काम चल पड़ा है. अब तो मैं तरक्की की सीढ़ियाँ चढ़ता चला जाऊंगा. लेकिन उसकी सोच के विपरीत व्यापारिक उतार–चढ़ाव के कारण उसे उस साल अत्यधिक घाटा हुआ.

अब तक आसमान में उड़ रहा वह व्यक्ति यथार्थ के धरातल पर आ गिरा. वह उन कारणों को तलाशने लगा, जिनकी वजह से उसका व्यापार बाजार की मार नहीं सह पाया. सबने पहले उसने उस दूसरे व्यक्ति के व्यवसाय की स्थिति का पता लगाया, जिसने उसके साथ ही व्यापार आरंभ किया था. वह यह जानकर हैरान रह गया कि इस उतार–चढ़ाव और मंदी के दौर में भी उसका व्यवसाय मुनाफे में है. उसने तुरंत उसके पास जाकर इसका कारण जानने का निर्णय लिया.

अगले ही दिन वह दूसरे व्यक्ति के पास पहुँचा. दूसरे व्यक्ति ने उसका खूब आदर–सत्कार किया और उसके आने का कारण पूछा. तब पहला व्यक्ति बोला, "दोस्त! इस वर्ष मेरा व्यवसाय बाजार की मार नहीं झेल पाया. बहुत घाटा झेलना पड़ा. तुम भी तो इसी व्यवसाय में हो. त्तुमने ऐसा क्या किया कि इस उतार–चढ़ाव के दौर में भी तुमने मुनाफा कमाया?"

यह बात सुन दूसरा व्यक्ति बोला, "भाई! मैं तो बस सीखता जा रहा हूँ, अपनी गलती से भी और साथ ही दूसरों की गलतियों से भी. जो समस्या सामने आती है, उसमें से भी सीख लेता हूँ. इसलिए जब दोबारा वैसी समस्या सामने आती है, तो उसका सामना अच्छे से कर पाता हूँ और उसके कारण मुझे नुकसान नहीं उठाना पड़ता. बस ये सीखने की प्रवृत्ति ही है, जो मुझे जीवन में आगे बढ़ाती जा रही है."

दूसरे व्यक्ति की बात सुनकर पहले व्यक्ति को अपनी भूल का अहसास हुआ. सफलता के मद में वो अति–आत्मविश्वास से भर उठा था और सीखना छोड़ दिया था. वह यह प्रण कर वापस लौटा कि कभी सीखना नहीं छोड़ेगा. उसके बाद उसने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और तरक्की की सीढ़ियाँ चढ़ता चला गया.

सीख – दोस्तों, जीवन में कामयाब होना है, तो इसे पाठशाला मान हर पल सीखते रहिये. यहाँ नित नए परिवर्तन और नए विकास होते रहते हैं. यदि हम स्वयं को सर्वज्ञाता समझने की भूल करेंगे, तो जीवन की दौड़ में पिछड़ जायेंगे. क्योंकि इस दौड़ में जीतता वही है, जो लगातार दौड़ता रहता है. जिसें दौड़ना छोड़ दिया, उसकी हार निश्चित है. इसलिए सीखने की ललक खुद में बनाये रखें, फिर कोई बदलाव, कोई उतार–चढ़ाव आपको आगे बढ़ने से नहीं रोक सकता. **********

छत्तीसगढ़ी हाना

1. घी गंवागे पीसान म

   अर्थ– किसी चिज को व्यर्थ न जाने देना।

2. परोसी के मारे ले सांप नई मरय

   अर्थ– दूसरों के भरोसे पर कामकाज नही होता खुद भी करना पड़ता हैं।

   पहले से कष्ट और उपर से दूसरा संकट आना ।

3. दुब्बर बर दु उपसाढ़

   अर्थ– पहले से कष्ट और उपर से दूसरा संकट आना

4. थुके थुके मा बरा नई चुरय

   अर्थ– कामकाज मुफ्त में नही होता मेहनत करना पढ़ता हैं।

5. घर मा नांग देवता भिंभोरा पुजे ला जाये

   अर्थ–अपने नजदीक में उपलबध व्यक्ति या साधन को छोड़कर बाहर तलाश करना।

6. एक झन लइका अउ गांव भर टोनहीं

   अर्थ– एक वस्तु और उसके लेने वाले ग्राहक की तादाद ज्यादा।

7. उजड़े मड़वा मा डीड़वा नाच

   अर्थ–कोई काम खत्म होने के बाद चुस्ती और तुदरूस्ती दिखाना।

8. आवन लागे बरात तब ओरन लगे कपास

   अर्थ– कार्य के प्रारंभ होने तक व्यवस्था का न हो पाना।

9. मुँह कान के जतन नही , बंदन के खइता।

   अर्थ बेकाम की वस्तु के लिए खर्च

10. हाथ केहे ले परान नइ छुटे

    अर्थ– अपनी ईच्छा से मृत्यु नही हो सकती।

11. अढ़ा बईद प्राण ला खईस

    अर्थ– अनपढ़ लोगो से खतरा रहता है।

ताम्रध्वज साहू
कक्षा– बी.एड. चतुर्थ सेमेस्टर
सत्र–2023–24

कोशिश कर----------

कोशिश कर हल निकलेगा , आज नही तों कल निकलेगा ।
अर्जुन के तीर सा साध , वात्सल्य से भी जल निकलेगा
मेहनत कर पौधों को पानी दे बंजर जमीन से भी फल निकलेगा
ताकत झूठा हिम्मत को आग दे फौलाद का भी बल निकलेगा
जिंदा रख दिल में उम्मीदों को गरल के समंदर से भी गंगाजल निकलेगा
कोशिश जारी रख कुछ कर गुजरने की जो है आज थमा थमा सा चल निकलेगा।

नीता
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
---------- सत्र–2023–24

----------कुछ पाना हैं तो मेहनत कर

कुछ करना है तो डटकर चल थोड़ा दुनिया से हटकर चल ।
लिक पर हो तो सभी चलते हैं कभी इतिहास को पलट कर चल
बिना काम के मुकाम कैसा ? बिना मेहनत के दाम कैसा ?
जब तक न हासिल हो मंजिल तो राह में आराम कैसा ?
अर्जुन सा निशाना रख मन में ना कोई बहाना रख
लक्ष्य सामने है सब उसी पर अपना ठिकाना रख
सोच मत साकार कर अपने कर्मों से प्यार कर
मिलेगी तेरी मेहनत का फल किसी और का ना इंतजार कर
जो चलते थे अकेले उनके पीछे आज मेले हैं
जो करते रहे इंतजार उनकी जिंदगी में आज भी झमेले हैं

लता ध्रुव
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
सत्र–2023–24----------

सुविचार----------

अति उपलब्धता के बाद अक्सर आपकी कीमत कम हो जाती है ,
या पूर्णतः समाप्त इसलिए जीवन में अनुपलब्धता को प्राथमिकता दिया गया है जो दुर्लभ है वही दोस्त है और अमृत तुल्य भी ।।

जगदीश सिदार
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
----------सत्र–2023–24

According to Dr. APJ Abdul Kalam the full form of success

See your goal
Understand the obstacles
Create a positive mental picture
Create yous mind of self dou
Embrance the challenge
Stay on track
Say , how the world you can do it

Thought - “It is very easy to defect someone .
But it is very hard to win someone”

पुर्णिमा वर्मा
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
----------सत्र–2023–24

----------The wolf and the lamb

One day , A lamb was eating sweet gross away from her flock of sheep she didn't notice a wolf walking nearer to her. When she saw the wolf , she started pleading , please don't eat me My stomach is full of grass you can wait a while to make my meet taste much better. The grass in my stomach will be digested quickly if you let me dance. The wolf agreed.

While the lamp was dancing she had a new idea. She Said, I can dance faster if you take my bell and ring it so hard . The work took the bell and started to ring so hard . The shepherd heard the sound and ran quickly to save the lamb’s life.

MORAL :- It is in our moments of decision that our destiny is shaped.

जसविदंर कौर खालसा
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
सत्र–2023–24----------

जिंदगी--

चलो हंसने की कोई , हमें वजह ढूंढते हैं ,
जिधर न हो कोई गम , वो जगह ढूंढते हैं ।
बहुत उड़ लिए उँचें आसमानों में यारों ,
चलो जमीं पे ही कहीं हम सतह ढूंढते हैं ।
छूटा संग किताबों का जिंदगी की जंग में
चलो उनके दिलों की हम गिरह ढूंढते हैं ।
बहुत वक्त गुजर भटकते हुए अंधेरों में ,,
चलो अंधेरी रात की हम सुबह ढूंढते हैं।।

रीना ध्रुव
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
--सत्र–2023–24

--**''कृषि में नौकरी की अपार संभावनाएं''**

आमतौर पर आज का युवा वर्ग हर क्षेत्र में अपने भविष्य को बनाने में सक्षम है जिसके लिए विभिन्न क्षेत्रों में नौकरी की संभावनाओं को टटोलता रहता है जहां देश–विदेश में औद्योगिकी और टेक्नोलॉजी ने अपने–अपने क्षेत्र में विकास के बड़े आयाम स्थापित किए हैं वहीं कृषि का क्षेत्र भी नहीं उपलब्धियों को हासिल कर रहा है आज कृषि का विकास बहुत तेजी से हो रहा है जिसकी बदौलत इसमें रोजगार के नए अवसर पनपने लगे हैं खेती–बड़ी करने वाले किसान जहां कल दयनीय जीवन बसर कर रहे थे वहां आज इनका जीवन स्तर पर ऊपर उठने लगा है जिनका मुख्य कारण कहीं ना कहीं खेती में पनप रहे रोजगार के अवसरों को माना जा सकता है।

जोगिंदर सिंह मनहरें
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
सत्र–2023–24--

नदियाँ --

नदिया शांत बह रही है इसे साथ ही बहने दो
जो कुछ नहीं कहना चाहता उसे चुप ही रहने दो नदियों की उफाान से यकीनन बाढ़ ही आएगा
किनारे तो साथ जाएंगे ही, ये अपने साथ मासूमों को भी ले जाएगा ।

शिवम वर्मा
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
---सत्र–2023–24

---**कविता**

छूट रहा है सब कुछ धीरे–धीरे , वो आंचल वों आंगन
वो साथ साथियों का , छूट रहा है यूं ही धीरे–धीरे......
अधूरे सपने.........अधूरी सी है ख्वाहिशें
क्योंकि हाथ छोड़ रहे हैं अपने धीरे–धीरे
बदलेगा सब कुछ मेरे नाम के अलावा
ये भी तो बात बदल रही है यह सब कुछ छोड़कर यूंही धीरे–धीरे
ना मैं चहेली हूं ना मैं चहेलीवार हूँ बरसों की रीत है शादी
हर लड़की छोड़ती है सब कुछ धीरे–धीरे ...
पर उनसे मिलते–मिलते
जाना हमने की यूं ही परेशान थे हम
सोच बदलकर रख दी है उन्होंने कहते हैं की मिल रही है खुशियां नए रिश्तों के ऊपर में यूं ही धीरे–धीरे ।।

मनोज साहू
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
---सत्र–2023–24

शिक्षक ---

जीवन में जो राह दिखाएं सही तरह चलना सिखाए
मात–पिता से पहले आता जीवन में सदा आदर पाता।
सबको मान प्रतिष्ठा जिससे ,सीखी कर्तव्यनिष्ठा जिससे
कभी रहना दूर मैं जिससे वह मेरा पथप्रदर्शक है
जो मेरे मन को भाता वह मेरा शिक्षक कहलाता।
कभी है शांत कभी है धीर स्वभाव में सदा गंभीर मन में दबी रही ये इच्छा
काश मैं उस जैसा बन पाता जो मेरा शिक्षक कहलाता।

लक्ष्मी साहू
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
---सत्र–2023–24

--**कोशिश**

कोशिश करने वालों की हार नहीं होती
लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा–जाकर खाली हाथ लौट आता है
मिलते नहीं सहज नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगुना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी हाल खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

गजेन्द्र साहू
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
सत्र–2023–24---

संकल्प----------

दृढ़ संकल्प है तो विकल्प , नहीं ढूंढना
निश्चय जब कर लिया संकल्प नहीं तोड़ना
खुद पर विश्वास और मन में उमंग हो
कौशल के साथ अगर साहस का संग हो तो
किसी भी काम को अधर में नहीं छोड़ना ,
निश्चय जब कर लिया संकल्प नहीं तोड़ना
रात्रि एक दिन सुबह के साथ आएगी अंधकार चिरकर प्रकाश साथ
लायेगीं ठान लिया एकबार मूँह नहीं तू मोड़ना,
निश्चय जब कर लिया संकल्प नहीं तोड़ना

रिचा दीवान
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
----------सत्र–2023–24

----------कहानी

एक नदी किनारे दो वृक्ष थे एक वृक्ष का नाम करण और दूसरे वृक्ष का नाम अर्जुन था , दूसरे ओर से कुछ पक्षी अपने परिवार को लेकर आता है और करण वृक्ष से कहता है कि मुझे आपके वृक्ष में घोंसला बनाना है रहना है पर करंण पक्षियों को कठोर वचन , भला बुरा कहता है ।

फिर अर्जुन वृक्ष के पास जाकर पक्षी कहता है कि मुझे शरण दे दीजिए और अर्जुन वृक्ष मान जाता है

एक दिन तेज आंधी तूफान आता है फिर कारण वृक्ष उखड़ जाता है और नदी में बहने लगता है इसे देखकर पक्षिंया खुश होते हैं और बोलते हैं कि तुम्हारे साथ ऐसा ही होना था तब करण वृक्ष बोलता है कि मुझे पता था कि मैं कमजोर हूं कभी भी मेरी जड़ उखड़ जाएगा इसलिए मैंने तुम्हें शरण नहीं दिया।

उद्देश्य – किसी की कठोरता दूसरों के भलाई के लिए भी हो सकता है''

जितेन्द्र चर्तुवेदी
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
सत्र–2023–24----------

बढ़े चलों----------

फूल बिछे या कांटे हो राह ना अपनी छोड़ो तुम
चाहे जो विपदायें आयें मुख को जरा ना मोड़ो तुम।
साथ रहे या ना रहे साथी हिम्मत मगर न छोड़ो तुम ,
नहीं कृपा की भिक्षा मांगो डर न दिन बन जोड़ो तुम।
बस ईश्वर पर रखो भरोसा पाठ प्रेम का पढ़े चलो ,
जब तक जान बनी हो तन में तब तक आगे बढ़े चलो।।

योगेश्वरी ध्रुव
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
----------सत्र–2023–24

कुछ पल बैठा करो----------

कुछ पल बैठा करो मां बाप के पास
हर चीज नहीं मिलती मोबाइल के पास
कुछ पल बैठा करो गुरु के पास
हर चीज नहीं मिलती गूगल के पास
कुछ पल बैठा करो दोस्तों के पास
हर चीज नहीं मिलती फेसबुक के पास
कुछ पल बैठा करो खुद के पास
हर चीज नहीं मिलती व्हाट्सएप के पास

सौरभ गुप्ता
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
----------सत्र–2023–24

----------वक्त नहीं

जिंदगी कितनी व्यस्त हो गई है कि अपने आप के लिए वक्त नहीं
हर खुशी है लोगों के दामन में पर एक हंसी के लिए वक्त नहीं
दिन रात दौड़ती दुनिया में जिंदगी के लिए वक्त नहीं
माँ की लोरी का एहसास तो है पर माँ को माँ कहने का वक्त नहीं
सारे रिश्तों को हम मर चुके अब उन्हें दफनाने का वक्त नहीं
सारे नाम मोबाइल में है पर दोस्ती के लिए वक्त नहीं
गैरों की क्या बात करें जब अपनों के लिए वक्त नहीं
आंखों में है नींद बड़ी पर सोने के लिए वक्त नहीं
पैसों की दौड़ में ऐसे दौड़े की थकने के लिए वक्त नहीं
दिल में बहुत बातें हैं बताने के लिए लेकिन बताने के लिए वक्त नहीं

दुर्गेश साहू
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
सत्र–2023–24----------

कविता ----------

मैं हंस रही हूं जोर–जोर से हंस रही हूं
अपने अंदर के दर्द को एहसास करवाए बिना आंसू छलके बिना
संसार मुझे समझ नहीं रहा परंतु मैं उन्हें समझ रही हूं दर्शाए बिना
मैं मन से रो रही हूं लफ्जों से बयां किए बिना
शायद ही कोई समझ जाए कुछ बताएं बिना ,
हां मैं रो रही हूं अपनों को जताए बिना
अपनी अतः आत्मा को समझे बिना

राधिका ध्रुव
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
----------सत्र–2023–24

The starfish story----------

An old man was walking one on the beach one morning after a is storm. In the distance he could see someone moving like a lancer.

As he come closer he saw that it was a young woman picking up starfish and gently throwing them into the ocean. Young lady why are you throwing starfish into the ocean?

“The sun is up and the tide is going out and if I do not throw them in they will die”,

She Said,

“But young lady ,do you not realize that there are many miles of beach and thousands of starfish?

you cannot possibly make a difference.”

The young woman listened politely then hend down picked up another starfish and throw it into the sea.

“It made a difference for that one”

“Life’s a Dance”

पदमा पैकरा
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

----------सत्र–2023–24

----------हाथ पर आसमान

लोग ऊंची उड़ान रखते हैं हाथ पर आसमान रखते हैं
शहर वालों की सादगी देखो अपने दिल में मचान रखते हैं
ऐसे जासूस हो गए मौसम सबकी बातों पर कान रखते हैं
मेरी इस अहद में ठहाके भी आंसुओं की दुकान रखते हैं
हम सफीने हैं मोम के लेकिन आग के बदलाव रखते हैं

मोनिका वैष्णव
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

----------सत्र–2023–24

आजादी----------

पंछी है कहे अगर तो उड़ने में कर महक तु
रात है काली अगर दिया जलाकर रोशन कर तु
बीत गए कई साल रूढ़िवादी विचारों में उलझ कर
सुलझा मां के भाव तू
औरत आदमी या हो बच्चा सबके जीवन का सम्मान तु

संजना ध्रुव
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

----------सत्र–2023–24

----------पहेलियां

1. वह कौन है जिसके पास मुंह तो नहीं है लेकिन बोलना खूब है ?
   जवाब– रूपया
2. वो कौन सी चीज है जिसे काटने पर लोग गाना गाते हैं ?
   जवाब– केक
3. वह क्या है जिसे जितना ज्यादा साफ करने की कोशिश करोगे वह उतना ही काला होता जाएगा ?
   जवाब– ब्लैक बोर्ड
4. ऐसी कौन सी चीज है जो सारे बच्चे खाते हैं लेकिन किसी को अच्छी नहीं लगती है ?
   जवाब– डांट फटकार
5. वह कौन है जो हमेशा दूसरों की गवाही देता है ?
   जवाब– भारत का इतिहास

चन्द्रिका ध्रुव
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

सत्र–2023–24----------

छत्तीसगढ़ी जनउला----------

1. एक ठन धान के घर भर भूसा
   जवाब– चिमनी
2. खा पी के झुठही बलावय
   जवाब– बहारी
3. दिन–मन अल्लर राहय , रात कन अड़ें राहय
   जवाब– छांद डोरी
4. पांच कबूतर पांचे रंग, महल में जाके ऐके रंग
   जवाब– पान सुपारी
5. नानकुन डबरी बने, बूड़े भारी जहाज , पूछी कोती ले पानी पीये , कोनो पंडित करो विचार ?
   जवाब–

आरती साहू
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

----------सत्र–2023–24

----------अनमोल वचन

‘‘ सब्र कोई कमजोरी नहीं होती है यह वह ताकत होती है जो सब में नहीं होती है’’

सहोद्रा नेताम
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

सत्र–2023–24----------

दुनिया का सबसे पुराना पेड़----------

चिली में 5,000 साल पुराने पेड़ को आधिकारिक तौर पर दुनिया के सबसे पुराने पेड़ के रूप में मान्यता दी गई है। पेड़, एक पेटागोनियन सरू, एलर्स कोस्टेरो नेशनल पार्क में स्थित है और इसे "महान दादाजी" उपनाम दिया गया है। यह 5,000 और 6,500 साल पुराना होने का अनुमान है, जिससे यह पृथ्वी पर सबसे पुराना जीवित जीव बन गया है। महान दादाजी का पेड़ एक विशाल नमूना है, जो 28 मीटर लंबा और 4 मीटर (13 फीट) व्यास का है।... बार्डन एनीबल हेनरिकेज ने 1972 में जंगल का गश्त के दौरान पेड़ की खोज की थी । यह संयुक्त राज्य अमेरिका में कैलिफोर्निया में पाये जाने वाले 4850 वर्षीय ग्रेंट बेसिन ब्रिसलकोन पाइन मेथुसेलह से भी पुराना पेड़ हैं।

निहाल सिंह ठाकुर
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
----------सत्र–2023–24

----------हाथ बढ़ा ए जिंदगी

एक सुबह एक मोड़ पर मैंने कहा उसे रोक कर
हाथ बढ़ा ए जिंदगी आंख मिला के बात कर
रोज तेरे जीने के लिए एक सुबह मुझे मिल जाती है
मुरझाती है कोई शाम अगर तो रात कोई खिल जाती है
मैं रोज सुबह तक आता हूं और रोज शुरू करता हूं सफर
हाथ बढ़ा ए जिंदगी आंख मिला के बात कर.....

संध्या साहू
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
सत्र–2023–24----------

मेरा भारत----------

मेरा भारत जागे जहां मस्तिष्क निर्भीक हो
और मस्तक ऊंचा रहे जहां ज्ञान स्वतंत्र हो
जहां अपने घरेलू स्वार्थों की दीवारों से
विश्व टुकड़ों में ना बंट जाए
जहां शब्द सत्य की गहराई से उभरे
जहां अनवरत परिश्रम से हमारे हाथ सिद्धि की और बढ़ते रहे
जहां बुरे संस्कारों के रेगिस्तान में
हमारे विवेक का झरना सुख ना पाए
जहां मन वचन कर्म की उदारता से
हमारा मस्तिष्क सदा अग्रसर रहे
हे प्रभु इस स्वतंत्रता के स्वर्ग में मेरा देश जागृत हो सकें।

सपना
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
----------सत्र–2023–24

----------हास्य कहानी – रामू नौकर

एक सेठ अपने नौकर को समझाते हुए,
देख रामू मेरे पास कोई भी मिलने आता है तो मैं तुम्हें आवाज लगाऊंगा की रामू शरबत लाओ तो , तुम आकर कहोगे कि मलिक बादाम का लाउ, किशमिश का या काजू का।
मेरे कहने का मतलब है मैं जो भी चीज तुमसे मंगवाऊं तो तुम मेहम. ानों के आगे एक चीज के दो–तीन नाम लिया करो जैसे मैं कहूं रामू चाय लाओ – तो तुम कहना मलिक चाय लाउ कॉफी या दूध ही ले आउ, जैसे मैं कहूं ठंडा ले आओ तो तुम कहोगे – मलिक पेप्सी लाउ थम्स अप या मैरिंडा मेरी बात अच्छी तरह समझ गया न।
रामू – समझ गया मालिक
एक बार सेठ के पास पांच–छः बड़े सेठ व्यापार के सिलसिले में आए और अपने व्यापार के बारे में बातें कर रहे थे तो उन सेठों ने कहा कि सेठ जी आपके पिताजी के सामने भी बातें हो जाए तो और भी अच्छा होता,
सेठ ने कहा ठीक है मैं अभी बुला देता हूं
सेठ ने रामू को आवाज लगाई रामू ,
रामू दौड़कर आया और कहा जी मालिक
मलिक– जरा मेरे पिताजी को बुला लाओ।
रामू – कुछ सोच कर, मालिक कौन से पिता जी को बुलाउ दिल्ली वाले, राजस्थान वाले या मुंबई वाले को. .....

ममता वर्मा
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
सत्र–2023–24----------

----------*मेरा गावं*

कोलाहल से दूर खड़ा एक छोटा सा है गांव मेरा ।
है उपवन सावन बसंत यहां ,
है पेड़ की ठंडी छाव यहां ।।
यहां धरती मां की परम कृपा ,
है बाग बगीचों में दुनिया ।
निर्मल जल है , निर्मल मन है ,
शांति संपदा से भरा कण–कण है ।
शिक्षा का संचार यहां है , देशभक्ति का भाव यहां हैं ।
चिड़िया कि वो ची–ची आहट,
मां के आंचल का वो आनंद।
है सब दुखों से दूर खड़ा , एक छोटा सा है गांव मेरा ।।

रीतू साहू
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर
----------सत्र–2023–24

एकता में ही शक्ति है----------

एक बार, जंगल में कबूतरों का एक झुंड उड़ रहा था। वे बहुत भूखे थे और उनका मुखिया अपने साथियों के लिए बहुत ही बेताबी से कुछ भोजन तलाश कर रहा था। नीचे देखने पर पर मुखिया को जमीन पर कुछ अनाज बिखरा दिखा। उसे देख वह खुश हुआ कि कम से कम उन्हें खाने के लिए कुछ मिल तो गया, झुंड नीचे उतरा और खाने के लिए तैयार हो गया।

नजदीक के पेड़ पर बैठे एक कौवे ने उन्हें चेतावनी दी कि, यह एक बहेलिये द्वारा बिछाया गया जाल है, लेकिन कबूतर इतने ज्यादा भूखे थे कि वे चावल के दानों को खाने से खुद को रोक नहीं पा रहे थे। जैसे ही उन्होंने खाना शुरू किया, उन्हें एहसास हुआ कि वे बहेलिये द्वारा बिछाए गए जाल पर भोजन कर रहे हैं और अब वे उड़ नहीं सकते। मुखिया को छोड़कर वे सभी घबराने लगे, मुखिया ने उन्हें धैर्य रखने और भागने की योजना बनाने के बारे में सोचने के लिए कहा।

कबूतरों के मुखिया ने अपने साथियों को एक साथ उड़ान भरने की कोशिश करने के लिए कहा, ताकि वे सभी एक साथ उड़ान भरेंगे जिससे वे नेट उठाने के लिए पर्याप्त ताकत पैदा कर पायेंगे। कबूतरों ने अपने मुखिया के निर्देश के अनुसार वैसा ही किया और वे अपने साथ जाल लेकर सफलतापूर्वक उड़ गए।

कबूतरों के मुखिया का एक चुहा मित्र था जिसने जाल को काट दिया और उन्हें मुक्त कर दिया। अंत में, कबूतरों के मुखिया ने अपने साथियों से कहा – "दोस्तों तुमने देखा आज एक साथ मिलकर हमने वो कर दिखाया है जो अकेले असंभव था। हमेशा याद रखें कि एकता में ही शक्ति है।"

प्रियंका साहू
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

----------सत्र–2023–24

--------वह क्रांतिकारी जिसने अपनी लिखी किताबें बेचकर ----------खरीदे हथियार--------

19 दिसंबर भारतीय इतिहास की वो तारीख है जो अपने आप में त्याग और बलिदान का अमिट रंग समेटे हुए है। 11 जून 1897 को उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर जिले में माता मूलारानी और पिता मुरलीधर के पुत्र के रूप में जन्मे क्रांतिकारी रामप्रसाद बिस्मिल को अंग्रेजों ने ऐतिहासिक काकोरी कांड में मुकदमे के नाटक के बाद 19 दिसंबर, 1927 को गोरखपुर की जेल में फांसी पर चढ़ा दिया था।

बहुत कम लोग ही जानते होंगे कि भारतीय जनमानस में आजादी का अलख फूंकने वाले इस क्रांतिकारी के बहुआयामी व्यक्तित्व में एक संवेदशील कवि/शायर, साहित्यकार और इतिहासकार के साथ–साथ एक बहुभाषिक अनुवादक भी शामिल था और लेखन या कविकर्म के लिए उनके 'बिस्मिल' के अलावा दो और उपनाम थे– 'राम' और 'अज्ञात'।

30 साल के अल्प जीवनकाल में रामप्रसाद बिस्मिल की कुल मिलाकर 11 पुस्तकें प्रकाशित हुईं लेकिन ये सभी पुस्तकें फिरंगी हुक्मरानों के कोप से न बच सकीं। सभी किताबें जब्त कर ली गयीं। लेकिन बिस्मिल क्रांति के ऐसे चितेरे थे जिन्होंने देश में क्रांति की मशाल जलाए रखने के लिए अपनी किताबों की बिक्री से मिले पैसों से जरूरी हथियार खरीदे। ऐसी मिसालें विश्व इतिहास में बहुत कम मिलती हैं।

राघवेन्द्र यादव
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

----------सत्र–2023–24

बढ़ती हुई सर्दी पर चुनिंदा दोहे----------

कुहरे की आकाश से , शाम हुइ क्या बात।
सुबह–सुबह ही लूट ली, सूरज की बारात।।

ठिठुर–ठिठुर कर ठंड से, होती है बेहाल।
कौन लूट कर ले गया श्पश्मीनाश की शाल ।।

पाँचों भाई–बहिन औ, पिल्ले–पिलिया चार।
सर्दी में लिपटे सहें ,कंगाली की मार।।

कुहरे, सरदी, धुंध के ,ऐसे–ऐसे दंड।
भिगो–भिगो कर हवा में , हाड़ तोड़ती ठंड।

आग सेंकने ज्यों गया, सूरज थानेदार।
कुहरे ने लूटा तभी, किरणों का बाजार।।

शिवानी केशरवानी
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

----------सत्र–2023–24

आज का युग विज्ञान का युग चारो ओर अविष्कार का युग

कुसुम
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

सत्र–2023–24----------

कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है।

छिप–छिप अश्रु बहाने वालो !
मोती व्यर्थ बहाने वालो !
कुछ सपनों के मर जाने से जीवन नहीं मरा करता है।

सपना क्या है? नयन सेज पर
सोया हुआ आँख का पानी,
और टूटना है उसका ज्यों
जागे कच्ची नींद जवानी
गीली उमर बनाने वालो।
डूबे बिना नहाने वालो !
कुछ पानी के बह जाने से सावन नहीं मरा करता है।

माला बिखर गयी तो क्या है
ख़ुद ही हल हो गई समस्या,
आँसू गर नीलाम हुए तो
समझो पूरी हुई तपस्या,
रूठे दिवस मनाने वालो !
फटी कमीज सिलाने वालो !
कुछ दीपों के बुझ जाने से आँगन नहीं मरा करता है।

खोता कुछ भी नहीं यहाँ पर
केवल जिल्द बदलती पोथी ।
जैसे रात उतार चाँदनी
पहने सुबह धूप की धोती
वस्त्र बदलकर आने वालो !
चाल बदलकर जाने वालो !
चन्द खिलौनों के खोने से बचपन नहीं मरा करता है।

लाखों बार गगरियाँ फूटीं
शिकन न आई पनघट पर
लाखों बार किश्तियाँ डूबीं
चहल–पहल वो ही है तट पर
तम की उमर बढ़ाने वालो
लौ की आयु घटाने वालो
लाख करे पतझर कोशिश पर उपवन नहीं मरा करता है।

लूट लिया माली ने उपवन
लुटी न लेकिन गन्ध फूल की,
तूफानों तक ने छेड़ा पर
खिड़की बन्द न हुई धूल की,
नफरत गले लगाने वालो !
सब पर धूल उड़ाने वालो !
कुछ मुखड़ों की नाराजी से दर्पन नहीं मरा करता है।

सचिन
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

----------सत्र–2023–24

स्वभाव----------

एक संत नदी किनारे बैठे थे, तभी उन्होंने देखा एक बिच्छू पानी में गिर गया है। संत ने जल्दी से बिच्छू को हाथ में उठा लिया। बिच्छू ने संत को डंक मार दिया, जिससे संत का हाथ कांपा और बिच्छू पुनरू पानी में गिरकर बहने लगा।

संत ने बिच्छू को डूबने से बचाने के लिए पुनरू उठा लिया। बिच्छू ने पुनरू संत को डंक मार दिया। संत का हाथ फिर से कांपा और बिच्छू पुनः पानी में गिर गया। संत ने बिच्छू को डूबने से बचाने के लिए एक बार फिर उठाया और फिर से वही हुआ।

वहां खड़ा एक आदमी यह सब देख रहा था तो उसने कहा– आपको यह बिच्छू बार–बार डंक मार रहा है फिर भी आप उसे डूबने से क्यों बचाना चाहते हैं?

संत ने कहा– बेटा बिच्छू का स्वभाव है डंक मारना और मेरा स्वभाव है बचाना। जब यह अपना स्वभाव नहीं छोड़ सकता तो मैं क्यों अपना स्वभाव छोडूं?

राहूल सिंह ध्रुव
कक्षा– बी.एड. प्रथम सेमेस्टर

----------सत्र–2023–24

सोशल मिडिया --

सोशल मीडिया का शाब्दिक अर्थ है सामाजिक माध्यम। भारत की 138 करोड़ जनसँख्या में से 43.1ः लोग स्मार्टफोन का इस्तेमाल करते हैं। लगभग सभी व्हाट्सप्प, फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर जैसी एप्प्स का रेगुलर इस्तेमाल करते हैं। सोशल मीडिया की पहुँच हर घर तक है। सभी आयु वर्ग के लोग इससे जुड़े हुए हैं।

सोशल मीडिया क्या है–

सोशल मीडिया एक आधुनिक इंटरनेटीय टेक्नोलॉजी है जो लोगों को एक–दूसरे के साथ जुड़ने, साझा करने और व्यक्तिगत या सार्वजनिक अवधारणाओं, जानकारी, और सामग्री को साझा करने की अनुमति देती है। सोशल मीडिया के माध्यम से, उपयोगकर्ता टेक्स्ट, फोटो, वीडियो, और अन्य मल्टीमीडिया सामग्री को बाँट सकते हैं

सोशल मीडिया और दैनिक जीवन–

सोशल मीडिया हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है। आज सोशल मीडिया के बिना जीवन की कल्पना करना मुश्किल है। वर्तमान पीढ़ी भाग्यशाली है कि इतिहास में अब तक के सबसे आश्चर्यजनक तकनीकी विकासों में से कुछ को देखा गया है। यह इस युग का राग बन गया है। सोशल मीडिया ने हमारा जीवन बहुत आसान बना दिया है।

सोशल मीडिया का समझदारी से इस्तेमाल है जरूरी–

सोशल मीडिया के सकारात्मकता का महत्वपूर्ण योगदान है। यह लोगों को एक मार्केटिंग और विज्ञापन प्लेटफॉर्म के रूप में मदद करता है, जहां उन्हें उत्पादों और सेवाओं की जानकारी मिलती है और व्यापारियों को नए ग्राहकों के साथ संपर्क स्थापित करने का अवसर मिलता है। सोशल मीडिया के माध्यम से लोग विभिन्न व्यापार, व्यापार और नवाचारों के बारे में जान सकते हैं

सोशल मीडिया से होने वाले नुकसान–

सोशल मीडिया ऐसी बहुत सारी जानकारी फैलाता है जो भ्रामक होती है। इसका गलत इस्तेमाल कर जानकारी को तोड़–मरोड़कर पेश किया जा रहा है। सोशल मीडिया की वजह से आम आदमी की प्राइवेसी ख़तरे में पड़ चुकी है। साइबर क्राइम्स इसका सबसे बड़ा उदाहरण हैं।

लिकेश साहू
कक्षा– बी.सी.ए. प्रथम वर्ष
सत्र–2023–24

साइबर क्राइम --

साइबर क्राइम क्या है –

दुनिया तेजी से डिजिटल दुनिया की ओर बढ़ रही है। डिजिटल होने के कारण हम सभी एक ऊंचाई तो छू ही रहे है साथ–के–साथ विज्ञान का दुरुपयोग भी हो रहा है, जिसके कारण साइबर अपराध तेजी से पैर पसार रहा है। बता दें, साइबर क्राइम वह होता है जहां एक साइबर अपराधी अपनी पहचान छुपा कर किसी उपकरण के सहायता से दूसरों को हानि पहुंचाने के उद्देश्य से उनकी सारी गोपनीय जानकारियां जैसे कि वित्तीय, व्यक्तिगत जानकारियां इत्यादि की चोरी करता है।

साइबर क्राइम के प्रकार–

साइबर एक्सपर्ट्स के अनुसार, साइबर क्राइम कई प्रकार से अंजाम दिए जाते हैं।

1. वेब हाईजैकिंग
2. नधिकृत पहुंच एवं हैकिंग
3. साइबर स्टॉकिंग
4. वायरस अटैक
5. सॉफ्टवेयर पायरेसी
6. सर्विस अटैक
7. पोर्नोग्राफी
8. फिशिंग
9. सलामी धोखाधड़ी
10. साइबर बुलिंग

साइबर क्राइम के प्रभाव

कई लोग ऐसे होते है, जो कि अपने निजी डेटा को दुनिया के साथ साझा नहीं करना चाहते हैं। ऐसे में हैकर्स के कारण लोगों को बहुत नुकसान होता है। कुछ लोग अपने डेटा के दुरुपयोग के कारण आहात हो जाते है और इस हद तक पहुंच जाते है कि लोग आत्महत्या तक कर लेते हैं। बता दें, साइबर अपराध इंटरनेट की मदद से होता है। इसमें अपराधी किसी व्यक्ति के कंप्यूटर नेटवर्क को बेकार ट्रैफिक और मैसेज से भर देते है। ऐसे लोगों का मकसद होता है कि व्यक्ति को पूरी तरह से परेशान करना।

साइबर क्राइम एक्ट क्या है?

साइबर क्राइम किसी भी देश के सबसे अहम चुनौतियों में से होता है। इसलिए भारतीय दंड संहिता में साइबर क्राइम एक्ट एंव प्रावधानों को जोड़ा गया है। बता दें, 'सूचना प्रौद्योगिकी

अधिनियम, 2000' ऐसा ही एक साइबर अपराधों से निपटने के लिए प्रावधान है, जिसके अंतर्गत 43, 43, 66A, 66B, 66C, 66D, 66E, 66F, 67, 67A, 67B, 70, 72, 72। एवं 74 धाराएं सम्मिलित की गई हैं।

भारत में साइबर क्राइम दी की रिपोर्ट कहां कर सकते है?

भारत में साइबर क्राइम के मामले दिन–प्रतिदिन बढ़ते जा रहे है। इसकी चपेट में आने के बाद व्यक्ति नहीं समझ पाता कि वह कहां रिपोर्ट करें और क्या करें? तो बता दें, cybercrime victim साइबर क्राइम के against complaint report दर्ज कर सकते हैं । Cyber crime complaint करने के लिए आप Indian government की वेबसाइट Cyber Crime Portal पर जा कर ऑनलाइन कंप्लेंट कर सकते हैं। इतना ही नहीं आप चाहे तो बड़े शहरों में साइबर सैल होते हैं, वहां भी आप रिपोर्ट करवा सकते है।

निष्कर्ष–

साइबर अपराध बेहद निंदनीय है। साइबर अपराध को लेकर लोगों में जागरुकता फैलाना जरूरी है कि लोग इंटरनेट का इस्तेमाल करें, तो पूरी जानकारी के साथ ही करें और सही कार्यों के लिए ही इंटरनेट का यूज करें। यदि लोग इंटरनेट का उपयोग किसी को भी नुकसान पहुंचाने के लिए नहीं करते है, तो साइबर क्राइम को रोका जा सकता है। यदि हमें साइबर क्राइम को रोकना है, तो हमें सर्तका बरतनी होगी।

सेउक रजक
कक्षा– बी.सी.ए. प्रथम वर्ष

----------सत्र–2023–24

Kindness----------

The virtue of kindness can be best taught through an essay to young kids. Writing short paragraphs will also help them in short sentence construction. Here is a short paragraph on kindness for their reference:

Kind people are always thought of as good people. Being kind means a person is caring, polite, and good to people around them. Many people in this world lack this virtue and want to hurt each other. Kindness should be the first base of character building in any person. Kind people don't hurt others. They understand and value each other's feelings and emotions. Providing support and helping people in their troubles are some highlights of kind people.

One needs to be caring, supportive, compassionate, and helpful to be kind. Kindness makes people happy and the world a better place. Everyone admires compassionate and kind people.

What Is Kindness?

Kindness can be simply described as being caring, compassionate, polite, and thoughtful. Being kind means having love, concern, tenderness, and respect for others. Kind people support other when they have a problem and don't hurt anyone, whether a person, animal, or plant. Kindness means being a good person who respects and cares for everyone.

Importance Of Kindness

Kindness is an important virtue. To be a good human, we have to be a kind person first. One cannot be a good person without being kind. Kindness is important to make this world and our society better. Even for our growth, kindness is important. We help each other because we care for each other. It is our kindness that makes us compassionate towards our family, friends, and strangers too.

How Can You Be Kind To Others?

We all are kind to our families as we love them. But for others, we find it difficult to be kind. To be kind to others, we don't have to do much. We just need to be genuinely good to them. Kindness doesn't require us to spend money on others. We just need to be caring, polite, and compassionate. Saying a few encouraging words, caring for them in trouble, helping them, and not hurting others are essential traits of a kind person.

मधु साहू
कक्षा– बी.सी.ए. प्रथम वर्ष

सत्र–2023–24----------

यह हार एक विराम है----------

यह हार एक विराम है
जीवन महासंग्राम है
तिल–तिल मिटूँगा पर दया की भीख मैं लूँगा नहीं।
वरदान माँगूँगा नहीं।।

स्मृति सुखद प्रहरों के लिए
अपने खंडहरों के लिए
यह जान लो मैं विश्व की संपत्ति चाहूँगा नहीं।
वरदान माँगूँगा नहीं।।
क्या हार में क्या जीत में
क्या हार में क्या जीत में
किंचित नहीं भयभीत मैं
संधर्ष पथ पर जो मिले यह भी सही वह भी सही।
वरदान माँगूँगा नहीं।।

लघुता न अब मेरी छुओ
तुम हो महान बने रहो
अपने हृदय की वेदना मैं व्यर्थ त्यागूँगा नहीं।
वरदान माँगूँगा नहीं।।
चाहे हृदय को ताप दो
चाहे हृदय को ताप दो
चाहे मुझे अभिशाप दो
कुछ भी करो कर्तव्य पथ से किंतु भागूँगा नहीं।
वरदान माँगूँगा नहीं।।

साहिल यादव
कक्षा– बी.कॉम द्वितीय वर्ष

----------सत्र–2023–24

छात्र जीवन ----------

किसी व्यक्ति के जीवन के कुछ सबसे दिलचस्प और यादगार वर्ष स्कूल में बिताए गए वर्ष होते हैं। यह किसी व्यक्ति के जीवन का वह आनंददायक और मनमोहक समय होता है, जिसमें खुशी और हँसी–मजाक होता है और वयस्कता के साथ आने वाली सभी चिंताओं से रहित होता है।

एक विद्यार्थी का हृदय सपनों से भरा होता है और उसकी बुद्धि विचारों से भरी होती है, जैसा कि हम इस समय विद्यार्थी जीवन में देख सकते हैं। इस चरण के दौरान व्यक्ति भविष्य के लिए योजना बनाना शुरू कर देता है।

यह कोई संदेह की बात नहीं है कि विद्यार्थी जीवन पूरी जिंदगी का सबसे अच्छा समय होता है। इस अवधि में छात्र अपना व्यवसायिक जीवन शुरू करते हैं। इस समय सभी बच्चों को अपना निर्णय लेने का अधिकार होता है। इस अवधि में एक छात्र को किताबों और जानकारी के अन्य स्रोतों से बहुत सारी जानकारी सीखनी होती है। इसका मतलब है कि उसे जीवन में कुछ महत्वपूर्ण रास्तों को तय और निर्धारित करना चाहिए। प्रारंभ में, छात्र चीजों को देखने के अपने तरीके से देखता है।

"विद्यार्थी का एक बहुत ही महत्वपूर्ण गुण है प्रश्न करना, विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने दें"– ए पी जे अब्दुल कलाम

विद्यार्थी जीवन ज्ञान और समझ प्राप्त करने के लिए है। विद्यार्थी जीवन में कोई बोझ नहीं होता। एक छात्र को ऐसे महान चरण को अवश्य अपनाना चाहिए। इसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए। यदि इसे बर्बाद कर दिया जाए तो आगे का जीवन कष्टमय हो जाता है। इसलिए हमें जल्द से जल्द इसके महत्व को जानने की जरूरत है। प्रत्येक छात्र को अपने लक्ष्य और सपनों को हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए। सीखने और सपनों को हासिल करने के लिए विद्यार्थी जीवन से बेहतर कोई मुहावरा नहीं है।

कुछ बच्चों को इस चरण का स्वाद चखने का मौका नहीं मिलता है। उनके पास शिक्षा प्राप्त करने के लिए संसाधन नहीं हैं। कई बच्चे छात्र बनने का सपना देखते हैं, लेकिन उन्हें ऐसा मौका नहीं मिल पाता। इसलिए छात्र होने के नाते हमें इस अवसर को हल्के में नहीं लेना चाहिए। हमें इसका अधिकतम लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए।

तरूण साहू
कक्षा– पीजीडीसीए

----------(2023–24)

महिला सशक्तिकरण----------

आज के आधुनिक समय में महिला सशक्तिकरण एक विशेष चर्चा का विषय है। हमारे आदि ग्रंथों में नारी के महत्त्व को मानते हुए यहाँ तक बताया गया है कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवतारू" अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते है।

लेकिन विडम्बना तो देखिए नारी में इतनी शक्ति होने के बावजूद भी उसके सशक्तिकरण की अत्यंत आवश्यकता महसूस हो रही है। महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का अर्थ उनके आर्थिक फैसलों, आय, संपत्ति और दूसरे वस्तुओं की उपलब्धता से है, इन सुविधाओं को पाकर ही वह अपने सामाजिक स्तर को ऊँचा कर सकती हैं।

राष्ट्र के विकास में महिलाओं का महत्त्व और अधिकार के बारे में समाज में जागरुकता लाने के लिये मातृ दिवस, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस आदि जैसे कई सारे कार्यक्रम सरकार द्वारा चलाए जा रहे हैं। महिलाओं को कई क्षेत्र में विकास की जरुरत है।

भारत में, महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों को मारने वाली उन सभी राक्षसी सोच को मारना जरुरी है, जैसे दृ दहेज प्रथा, अशिक्षा, यौन हिंसा, असमानता, भ्रूण हत्या, महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, वैश्यावृति, मानव तस्करी और ऐसे ही दूसरे विषय।

अपने देश में उच्च स्तर की लैंगिक असमानता है। जहाँ मि हलाएँ अपने परिवार के साथ ही बाहरी समाज के भी बुरे बर्ताव से पीड़ित है। भारत में अनपढ़ो की संख्या में महिलाएँ सबसे अव्वल है।

नारी सशक्तिकरण का असली अर्थ तब समझ में आयेगा जब भारत में उन्हें अच्छी शिक्षा दी जाएगी और उन्हें इस काबिल बनाया जाएगा कि वो हर क्षेत्र में स्वतंत्र होकर फैसले कर सकें।

पूर्णिमा साहू
कक्षा– पीजीडीसीए

----------सत्र–2023–24

ऑनलाइन शिक्षा----------

पिछले कुछ वर्षों में छात्रों के लिए ऑनलाइन शिक्षा एक तेजी से लोकप्रिय विकल्प बन गया है। प्रौद्योगिकी में प्रगति के साथ, छात्र अब अपने घर से ही शैक्षिक सामग्री और संसाधनों तक पहुंच सकते हैं। इसने सीखने का एक सुविधाजनक और सबसे अच्छा तरीका प्रदान किया है, जिससे छात्रों को अपनी गति से काम करने और शिक्षा को अपनी अन्य प्रतिबद्धताओं के अनुरूप ढालने की अनुमति मिलती है। ऑनलाइन शिक्षा रुचि के विशिष्ट क्षेत्रों में विशेषज्ञता के वि. कल्पों के साथ विषयों और पाठ्यक्रमों की एक विस्तृत श्रृंखला भी प्रदान करती है। हालांकि यह पारंपरिक कक्षा में सीखने के समान स्तर का सामाजिक संपर्क और व्यावहारिक अनुभव प्रदान नहीं कर सकता है, लेकिन ऑनलाइन शिक्षा कई छात्रों के लिए एक प्रभावी और सुलभ विकल्प साबित हुई है।

ऑनलाइन शिक्षा का एक मुख्य लाभ इसके द्वारा प्रदान की जाने वाली सुविधा है। छात्रों को अब स्कूलों या विश्वविद्यालयों में जाने की जरूरत नहीं है और वे किसी भी समय व्याख्यान और पाठ्यक्रम सामग्री तक पहुंच सकते हैं, जो इसे व्यस्त कार्यक्रम या अंशकालिक नौकरियों वाले लोगों के लिए उपयुक्त बनाता है। यह पद्धति छात्रों को आवश्यकतानुसार अवधारणाओं और सामग्रियों की समीक्षा करते हुए, अपनी गति से सीखने की अनुमति देता है। इसके अतिरिक्त, ऑनलाइन शिक्षा विविध विषयों में विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम प्रदान करती है, जिससे छात्रों को अपनी रुचियों का पता लगाने और अपने जुनून को आगे बढ़ाने का अवसर मिलता है। यद्यपि इसमें पारंपरिक कक्षाओं द्वारा प्रदान की जाने वाली आमने–सामने की बातचीत का अभाव हो सकता है, ऑनलाइन शिक्षा व्यक्तिगत और अनुक. ूलनीय सीखने के अनुभव की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान विकल्प के रूप में कार्य करती है।

मजहर खान
कक्षा– पीजीडीसीए

----------सत्र–2023–24

सिपाही----------

बस सेवा धर्म निभाना है।
धर्म नही है,अपना कोई।
सभी धर्मों को माना है,
हिन्दू, मुस्लिम,सिख ईसाई,
पर ईश्वर एक ,सभी ने माना है।
हम जगते हैं,सब सोते है।
यह जग सारा परिवार हमारा।
घर की गरीबी व मजबूरी ने रोका था।
पर मन में जो भाव देशसेवा का ठाना था।
नौकरी कर सेना में, देशभक्ति निभाई।
सेनापति के एक इशारे पर,
मर मिटना केवल यही जाना था।
जीतें जी लड़ मरू,पर याद फिर किसे आती है।
भूले सारा संसार पर,मुझे तो सेवा धर्म निभाना है।
हम ले बलिदानी ताकत, गमगीन होकर भी, खुशियां मनाते हैं।
जिगर है फौलाद का अपना, जिसमें देश को ,सहज कर रखते हैं।
जिससे बनी यह देह,उसी मे मिट मिल जाना है।
पर सेवा धर्म सतत निभाना है।

टिकेश्वर
कक्षा– पीजीडीसीए

----------सत्र–2023–24

जीवन का अंतिम सत्य मृत्यु है----------

जीवन का अंतिम सत्य मृत्यु है। ये बात जो लोग समझ लेते हैं, वे गलत कामों से दूर रहते हैं। मृत्यु के बाद कोई भी व्यक्ति अपने साथ कुछ चीज नहीं ले जा सकता है। इसीलिए हमें धर्म के अनुसार ही कर्म करना चाहिए। एक लोक कथा के अनुसार पुराने समय में एक संत सभी यात्रियों को श्मशान की ओर भेज देते थे। ताकि लोग समझ सके कि मृत्यु अटल सत्य है।

पुराने समय में एक संत गांव से बाहर अपनी छोटी सी कुटिया में रहते थे। उनकी कुटिया गांव से बाहर थी, इस कारण कई बार अनजान लोग भी उनके पास रुकते थे। राहगीर उनसे पूछते थे कि गांव की बस्ती तक कैसे पहुंच सकते हैं? संत उन्हें सामने की ओर इशारा करके रास्ता बता देते थे।

राहगीर जब संत के बताए हुए रास्ते से श्मशान पहुंच जाते थे। वहां पहुंचकर यात्रियों को बहुत गुस्सा आता था। कुछ लोग संत को बुरा–भला कहते और कुछ लोग चुपचाप दूसरा रास्ता खोजने लगते थे। एक दिन एक यात्री के साथ भी ऐसा ही हुआ, वह क्रोधी स्वभाव का था। श्मशान पहुंचकर उसे संत पर बहुत गुस्सा आया।

क्रोधित यात्री संत को बुरा–भला कहने के लिए उनकी कुटिया में पहुंच गया। उसने संत से कहा कि तुमने गलत रास्ता क्यों बताया? राहगीर ने संत को खूब गालियां सुनाई, जब यात्री चिल्लाते–चिल्लाते थक गया तो वह शांत हो गया। तब संत बोले कि भाई श्मशान भी बस्ती ही है? तुम लोग जिसे बस्ती कहते हो, वहां रोज किसी न किसी की मृत्यु होती है, रोज किसी न किसी का घर उजड़ जाता है, लोगों का आना–जाना लगा रहता है, लेकिन श्मशान ही एक ऐसी बस्ती है, जहां कोई एक बार आता है तो वह फिर कहीं और नहीं जाता।

श्मशान भी एक बस्ती है, यहां जो एक बार बस गया, वो हमेशा के लिए यहीं रहता है। मेरी नजर में तो यही बस्ती है। हर इंसान के लिए यही अंतिम पड़ाव है, सभी को मृत्यु के बाद यहीं आना है। इसीलिए हमें गलत कामों से बचना चाहिए।

ये बातें सोचकर मैं बस्ती का यही रास्ता बताता हूं। ताकि लोग समझ सके कि मृत्यु अंतिम सत्य है। संत की ये बात सुनकर यात्री को अहसास हो गया कि उसने संत पर चिल्लाकर गलती की है। उसने संत से क्षमा याचना की और गांव की ओर चल दिया।

रोशनी साहू
कक्षा– पीजीडीसीए

----------सत्र–2023–24

वो है मेरी माँ ----------

मेरे सर्वस्व की पहचान
अपने आँचल की दे छाँव
ममता की वो लोरी गाती
मेरे सपनों को सहलाती
गाती रहती, मुस्कराती जो
वो है मेरी माँ।

प्यार समेटे सीने में जो
सागर सारा अश्कों में जो
हर आहट पर मुड़ आती जो
वो है मेरी माँ।

दुख मेरे को समेट जाती
सुख की खुशबू बिखेर जाती
ममता की रस बरसाती जो
वो है मेरी माँ।

गायत्री वर्मा
कक्षा– बी.एस.सी. प्रथम वर्ष
----------(2023–24)

----------किसान कविता

बूँद बूँद को तरसे जीवन,
बूँद से तड़पा हर किसान
बूँद नही हैं कही यहाँ पर
गद्दी चढ़े बैठे हैवान.
बूँद मिली तो हो वरदान
बूँद से तरसा हैं किसान
बूँद नही तो इस बादल में
देश का डूबा है अभिमान
बूँद से प्यासा हर किसान
बूँद सरकारों का फरमान
बूँद की राजनीति पर देखों
डूब रहा है हर इंसान.

सागर साहू
कक्षा– बी.एस.सी. प्रथम वर्ष
(2023–24)----------

संघर्ष ही जीवन का हिस्सा है

संघर्ष ही जीवन का हिस्सा है,
मंजिल ही जीवन का किस्सा है।
विद्यार्थी बन मंजिल को पाना है,
राही बन मंजिल तक जाना है।
असफलता ही इनके जीवन का हिस्सा है,
सफलता ही इनके जीवन का किस्सा है।
मां के सपनों को पूरा करना है,
पिता के उम्मीदों पर खरा उतरना है।
दूसरों से पहले इन्हें खुद को जितना है,
दूसरों से पहले इन्हें लक्ष्य को भेदना है।
रातों से इन्हें लड़ना पड़ता है,
खुद को इन्हें जितना पड़ता है।
संघर्ष ही जीवन का हिस्सा है,
मंजिल ही जीवन का किस्सा है।
कलम टूट जाती है, मुश्किलें भी हार जाती हैं
इन विद्यार्थियों के सामने, मुसीबतें भी झुक जाती हैं
मुसीबतों को आसानी से झेल लेते हैं,
उलझनों को आसानी से सुलझा लेते हैं।
विद्यार्थियों का दर्पण पुस्तक हैं,
श्रृंगार इनका विद्या है
आदर्शवादी चंचलता सहनशीलता,
यही इनका परिधान है
हम विद्यार्थियों की यही पहचान है,
न कोई जाति नहीं कोई धर्म।
क्योंकि हम विद्यार्थी हैं।
इतने मजबूत हैं हौसले,
टूट जाये पहाड़ पर नहीं टूटेगा हम
विद्यार्थियों का हौसला।
संघर्ष ही जीवन का हिस्सा है,
मंजिल ही जीवन का किस्सा है।

चंचल वर्मा
कक्षा– बी.एस.सी. प्रथम वर्ष
----------(2023–24)

माता–पिता की सेवा न करने का फल

भयंकर कोढ़ से पीड़ित एक व्यक्ति दुकान–दुकान और गली दृ मुहल्ले में घूम रहा था। जब वह एक घर के द्वार पर भिक्षा माँगने पहुँचा तो वहाँ पर उस समय एक ज्योतिषी बैठा हुआ था। कोढ़ी को देखकर उस घर का स्वामी ज्योतिषी महाराज से बोला दृ आप कहते हैं कि मैं प्रश्न के द्वारा तीन जन्मों का हाल सही–सही बता सकता हूँ, तो क्या आप इस कोढ़ी व्यक्ति के भाग्य के बारे में कुछ बता सकते हैं?
ज्योतिषी महाराज बोले–क्यों नहीं?
मैं आपके प्रश्न द्वारा अभी इसके पूर्व जन्म का वर्णन बताता हूँ। तदनन्तर अपने गणित का हिसाब लगाकर जो फलादेश उन्होंने लिखकर दिया, वह इस प्रकार था–इसने पूर्व जन्म में और इस जन्म में भी अपने माता दृ पिता की सेवा नहीं की अपितु उन्हें हर प्रकार का दुःख पहुँचाया। यह न तो उनका कहना मानता था और न उनकी शिक्षा पर अमल करता था। फिर भी वे मोहवश इसकी बुराइयों की ओर ध्यान न देकर इसके शरीर को हर प्रकार से सुख देने का प्रयत्न करते रहते थे।

हे पापात्मा! जिन्होंने अपने शरीर के रक्त से तेरे शरीर का निर्माण किया उसे तूने न केवल भोजन और वस्त्र दिये बल्कि उन्हें हर प्रकार का कष्ट पहुँचाया।
तूने उनके कर्म का बदला तनिक भी नहीं चुकाया । उन्हें दिन–रात कष्ट पहुँचाकर उनके शरीर को जलाता रहा। इसी कारण शरीर पूरा होने पर नरक भोगना पड़ेगा और आयु पर्यन्त इस भयंकर कोढ़ से पीड़ित रहना पड़ेगा। ज्योतिषाचार्य जी की बात सुनकर सभी विस्मित रह गये और उन्होंने अपने–अपने माता–पिता की सदैव आज्ञा में रहकर तन–मन से सेवा करने की प्रतिज्ञा की।

खुशबू वर्मा
कक्षा– बी.एस.सी. प्रथम वर्ष
(2023–24)----------

----------कंप्यूटर पर कविता

मित्र मेरा कंप्यूटर प्यारा
मुझको इससे मिले सहारा
मम्मी पापा ऑफिस जाते
यह मेरा साथी है प्यारा

यह मुझको गाने सुनवाता
इसके संग मैं डांस दिखाता
मैं चाहूँ जब, फिल्म चलाऊं
कभी दोस्त से बात बनाऊं
जब चाहूँ मैं चित्र बनाना
नहीं मुझे कॉपी ब्रश लाना
कंप्यूटर पर चित्र बनाओ
जो चाहे वह रंग सजाओ

घर बैठे ई मेल भेज दो
नहीं डाकिए का अब काम
इंटरनेट से जुड़कर तो
सबकुछ होता, कितना आसान
यह जादू का डिब्बा है
या परीलोक से आया है
सच कहता हूँ अपने संग
झोली भर खुशियाँ लाया हैं.

दुलारी निषाद
कक्षा– डीसीए
(2023–24)----------

शिक्षक हैं शिक्षा का सागर----------

शिक्षक हैं शिक्षा का सागर,
शिक्षक बांटे ज्ञान बराबर,
शिक्षक मंदिर जैसी पूजा,
माता–पिता का नाम है दूजा,
प्यासे को जैसे मिलता पानी,
शिक्षक है वही जिंदगानी,
शिक्षक न देखे जात–पात,
शिक्षक न करता पक्ष–पात,
निर्धन हो या हो धनवान,
शिक्षक को सब एक समान!

रानी निषाद
कक्षा– डीसीए
----------(2023–24)

बहनों का प्यार----------

ये जो बहनों का प्यार है,
खुशियों का संसार है।

दुनिया का सबसे अच्छा उपहार है,
लड़ना झगड़ना रूठना मनाना।

यही तो इनके रिश्तों का आधार है,
ये जो बहनों का प्यार है।

रिश्तों की अलग पहचान है,
उनके आने से महक उठा घर आंगन परिवार है।

पांवों में बजती घुंघरू कि झनकार है,
बगियाँ में चहकी चिड़ियों की चटकार है,
ये जो बहनों का प्यार है।

टिकेश्वरी निषाद
कक्षा– डीसीए
----------(2023–24)

स्वच्छता है मानव जीवन का सार

स्वच्छता है मानव जीवन का सार,

गंदगी फैलाकर ना करो इसे बेकार।

हमें देश की तरक्की का नया अध्याय लिखना है,

साथ मिलकर स्वच्छता का गुण सीखना है।।

देश को स्वच्छ बनाने का लो संकल्प,

स्वच्छता का नही है दूसरा कोई वि. कल्प।

यदि इस समस्या के लिए आज आवाज ना उठाओगे,

तो कल अपनी आने वाली पीढ़ी को क्या बताओगे।।

प्रदूषण की समस्या का हमें कुछ करना होगा,

इस भयावह समस्या से साथ मिलकर लड़ना होगा।

आओ मिलकर देश में स्वच्छता का बिगुल बजाएं,

साथ मिलकर देश को स्वच्छता के मार्ग पर बढ़ाएं।।

रोहिणी निषाद
कक्षा– डीसीए
----------(2023–24)

देश मेरा प्यारा, दुनिया से न्यारा

देश मेरा प्यारा, दुनिया से न्यारा
धरती पे जैसे स्वर्ग उतारा।
ऊँचे पहाड़ों में फूलों की घाटी।
प्यारे पठारों में खनिजों की बाटी।
हरे–भरे खेतों में सरगम बजाएँ।
नदियों के पानी में चाहूँ मैं तरना।
मन ये गगन में उड़े रे।
ऐसे ये जी से जुड़े रे।
दूर मेरा देश ये गाँवों में बसता।
मुझको पुकारे है एक–एक रस्ता।
पैठा पवन मेरे पाँव में।
आना जी तू भी गाँव में।
देश मेरा प्यारा, दुनिया से न्यारा।
धरती पर जैसे स्वर्ग है।
जाँ भी इसे उत्सर्ग

हेमा निषाद
कक्षा– डीसीए
(2023–24)----------

KAMLAKANT SHUKLA INSTITUTE